बुद्ध-चरितावली

(ग्राम्य-गीतों मे)

रचयिता

श्री रामचन्द्रलाल

प्रकाशक

महाबोधि सभा

सारनाथ

प्रकाशक—भिक्षु सवरत्न, मन्त्री, महाबोधि सभा, सारनाथ
मुद्रक—ओम् प्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, बनारस ४३२५–१०

अपनी बात

विश्व शान्ति भारतीय सस्कृति की सनातन परम्परा है। वैदिक ऋषियो ने मन्त्रो द्वारा व्यापक शान्ति का आवाहन किया। धार्मिक चक्रवर्ती—सम्राट् प्रियदर्शी अशोक ने विश्व बन्धुत्व के लिए अपने प्रिय पुत्र तक को बाहर भेजा और "वसुधेव कुटुम्बकम्" सिद्धान्त के अनन्य उपासक महा मानव बापू ने उसी शान्ति एव अन्तजातीय सहिष्णुता के लिए अपनी आहुति दे दी। यदि भारतवर्ष की इसी अलौकिक परम्परा मे—राम कृष्ण की ही लीला भूमि पर भगवान बुद्धदेव का भी अवतार न होता तो महान आश्चर्य ही होता।

कारुणिक भगवान बुद्धदेव आए और मानवमात्र को सर्वदा के लिए कल्याण का मार्ग बताकर चले गए। विश्ववन्द्य बापू ने तथागत के ही माग पर चलकर भारतवर्ष का ही उद्धार नही किया बल्कि समूचे विश्व को अन्धकार से प्रकाश की ओर उन्मुख कर दिया। भगवान के अमृतमय उपदेशो से शाक्यवशीय राज्य परिवार ही नहीं, अपितु और भी तत्कालीन बडे बडे राजा, महाराजा, सेठ साहूकारो ने अपना अपना कुबेर जैसा वैभव त्याग कर सन्यास ग्रहण कर लिया था। राजा 'भिक्षु' बन गए थे। आज उसी त्याग और दान की अलौकिक, उदार एव व्यावहारिक व्याख्या में सन्त विनोबा भावे जी को विश्व का महाकल्याण झलक रहा है।

आज जब कि हमको स्वतन्त्र वायुमण्डल में उच्छ्वास लेने का सुअवसर मिला है हमने अपने गणतन्त्र राज्य की नींव तथागत के ही पथ पर डालने का प्रयास किया है। भगवान बुद्धदेव के आविभाव का ही प्रभाव है कि आज इस गिरी दशा मे भी भारतवष को एशियाखण्ड का सारा पूर्वार्द्ध श्रद्धा और प्रेम की दृष्टि से देखता है। विश्व मे बौद्ध धर्मावलम्बियो की फैली हुई विशाल सख्या इस कथन का प्रमाण है।

इतना होते हुए भी जहाँ राम कृष्ण के चरित गान का मधुर स्वर भारत की सारी भाषाओ में गूँज रहा है वहाँ पर बौद्ध धर्म के साथ ही गौतम बुद्ध की पावन स्मृति तक जनता के हृदय से दूर हो गई है। भरथरी और गोपी

चन्द के योगी होने के गीत गा गाकर आज भी रमत जोगी स्त्रियों को करुणार्द्र कर अपना पेट पालते चले जा रहे हैं। आज भी भगवान रामचन्द्र जी का चौदह वर्ष के वनगमन का प्रकरण प्रति दिन श्रोताओं को करुणा की धार मे बहाता रहता है, किन्तु कुमार सिद्धार्थ के महाभिनिष्क्रमण की सुधि दिलाने वाली वाणी साधारण जनता मे कहीं नहीं सुनाई देती! जिन बातों से हमारा गौरव था उन्हे ही हम भूलते जा रहे हैं। इसी से आज हमारे राष्ट्र का नैतिक स्तर नीचे खिसक गया है।

अपना देश किसानों का देश है और ग्रामीणों मे शिक्षा का अभाव है। अनुभव यह बतलाता है कि गाँववाले नीरस ढंग से कुछ भी पढ़ने या सुनने को तैयार नहीं होते। किन्तु उनको अपने मजे मजाए पुराने राग के गीतों मे अधिक रस मिलता है। उनकी इसी प्रवृत्तिके कारण भगवान बुद्धदेव का साधारण परिचय देते हुए उनके अमृतमय उपदेशों से गाँववालों को लाभान्वित कराने के लिए ही मैंने ग्राम्य गीतों में उनकी जीवनी और उनके उपदेश लिखने का साहस किया है।

प्रस्तुत पुस्तक मे बिरहा, लचारी, कॅहरवा, कजली, सोहर, फाग, आल्हा, विदेसिया, नयकवा, पूर्वी, धोबी गान, जोगी गान, आदि अधिक से अधिक सभी प्रचलित ग्राम्य गीत लिखे गए हैं।

ग्राम्य गीतों मे 'बुद्ध चरितावली' लिखने की प्रेरणा सारनाथ महाबोधि सोसाइटी के मन्त्री परम पूज्य श्रद्धेय भिक्षु श्री संघरत्नजी द्वारा मुझे मिली है। इसके लिए मै उनको किस प्रकार और किन शब्दों में बधाई देने का साहस करूँ! पुस्तक के प्रसगों को सुन सुनकर शुद्ध करने मे आदरणीय भिक्षु श्री धर्मरक्षितजी त्रिपिटकाचार्य ने अपना अमूल्य समय मुझे दिया है इसके लिए मै उनका आभारी हूँ। सारनाथ महाबोधि सोसाइटी ने इस पुस्तक के प्रकाशन का भार अपने ऊपर लेकर मुझे सर्वदा के लिए अपना कृतज्ञ बना लिया है। अन्त में मै उन महानुभावों का भी आभारी हूँ, जिनकी पुस्तको से कथानक समझने में मैने सहायता ली है।

रामचन्द्रलाल, निर्देशक
सचल शिक्षक दल
बनारस

बुद्ध-चरितावली

१



कँहरवा

सरन मनाइला तोहार बुद्ध बाबा हो,
तोहार बुद्ध बाबा हो,
सुनि लीहा हमरौ गोहार बुद्ध बाबा हो। टेक।
तोहरेहि रहिया पर गान्धी बाबा अइलै हो,
गान्धी बाबा अइलै हो,
कई गइलें बडा उपकार बुद्ध बाबा हो।
सरन मनाइला तोहार बुद्ध बाबा हो।

तोहरे सदेसवा बाबा जनता के सुनाई गइलें,
जनता के सुनाई गइलें,
चेते नाहीं मूरुख गँवार बुद्ध बाबा हो,
सरन मनाइला तोहार बुद्ध बाबा हो।

दुनिया की नइया देखा भँवरै मे डूबल हो,
भँवरै में डूबल हो।

जल्दी से उठावा पतवार बुद्ध बाबा हो,
सरन मनाइला तोहार बुद्ध बाबा हो।

तोहरी कहनियाँ हम गउवाँ के सुनइबै हो,
गउवाँ के सुनइबै हो।
भूल चूक करिहा मोर सुधार बुद्ध बाबा हो,
सरन मनाइला तोहार बुद्ध बाबा हो।

विरहा

(अवतार से पूर्व)

सुना हो विरना, हाँ सुना हो विरना—
गौतम बुद्ध की कहनियाँ सुना हो विरना। टेक।

भगवन् के आने से पहले घोर पाप था छाया,
हाँ घोर पाप था छाया।
दुखिया धरती माता ने रो-रोकर अरज सुनाया—
बहै नयनवन मे पनियाँ सुना हो विरना॥ गौतम०॥

काट-काट अनगिन पशुओ को हवन कुण्ड जलवाते,
हाँ हवन कुण्ड जलवाते।
अश्वमेध, गोमेध और नरमेध यज्ञ रचवाते—
रजवा करैं अस पूजनियाँ सुना हो विरना॥ गौतम०॥

बडी जातियाँ चुहल करैं छोटिन को सदा सतावैं,
छोटिन को सदा सतावैं।
उधर तपस्वी तप कर-कर नाहक निज बदन सुखावैं—
अइसै रहली तब चलनियाँ सुना हो विरना॥गौतम०॥

देख दुखी धरती-माता को देव सभी घबडाए,
हॉ देव सभी घबडाए।
आपस मे कुछ सोच समझ सब बोधि सत्व पर्ह आए—
आए बाबा की सरनियॉ सुना हो विरना ॥गौतम०॥

बोधि सत्व हॅसकर बोले भइया सब होहु सुखारी,
भइया सब होहु सुखारी।
अगणित जन्मा की जो कुछ है संचित शक्ति हमारी—
हरबै जियरा की जलनियॉ सुना हो विरना ॥गौतम०॥

शाक्य वश मे सुद्धोधन राजा कै पुत्र कहइवे।
राजा कै पुत्र कहइवे।
महामया की कोख उतर सुख प्रजापती पहुँचइवे—
सॉची करबै निज वचनियॉ सुना हो विरना ॥गौतम०॥

सत्य अहिसा त्याग प्रेम के सबको सबक पढइबै।
हॉ सबको सबक पढइबै।
ऊॅच नीच कै भेद मिटा हम सबको गले लगइबे--
कढबै सेवा की कठनियॉ सुना हो विरना ॥गौतम०॥

जबतक रहिहैं चॉद सुरुजवा रही सडकिया जारी,
हॉ रही सडकिया जारी।
जिसपर चलि वैकुण्ठे अइहैं चतुर पुरुष और नारी--
मेटिहैं ब्रह्मौ की लिखनियॉ सुना हो विरना ॥गौतम०॥

प्रभु की प्यारी बाते सुनकर देव सभी हरषाए।
हॉ देव सभी हरषाए।
गह गह गह गह बजे बाजने सुमन सभी बरसाए--
गाए जय जय जय की बनियॉ सुना हो विरना ॥गौतम०॥

दोहा

उधर देव होकर मगन, जोहन लागे बाट।
इधर प्रभो अवतार का, ठाटन लागे ठाट॥

शाक्य वश मे श्रेष्ठ नृप, शुद्धोदन था नाम।
उत्तर भारत मे बसत, कपिल वस्तु शुभ धाम॥

माया और प्रजापती, सभी गुणो की खान।
प्राण प्रजा नृप की रही, ये दोनो पट रानि॥

देवो पर उत करि कृपा, धैर्य दिए भगवान।
इत माया ने रात्रि मे, सपना लख्यो महान॥

३



[महामाया जी का स्वप्न]

माया देवी देखैली सपनवाँ, अरे सावनवाँ। टेक।

पहिले सुघर एक, छाया देखइली रामा—
लखतै लुभाइ गइले मनवाँ, अरे सावनवाँ। माया ।

दुसरे छ जोतियन कै, तारा देखत भइली—
जिससे रँगल वा असमनवाँ, अरे सावनवाँ। माया ।

देखतै देखत तारा, जगमग चलि भइलैं—
आई गइलै रानी के भवनवाँ, अरे सावनवाँ। माया ।

देवी के दहिने होई, गर्भं समाई गइलै—
बाहर भइलै हाथी के बहनवाँ, अरे सावनवाँ। माया ।

सख से उजला रग, सुघर मनोहर हाथी—
झूमै लगलैं रानी के सम्हनवाँ, अरे सावनवाँ। माया ।

इतनै मे देवी जी की, निदिया उचटि गइली,
लूटे लगली सुख कै खजनवाँ, अरे सावनवाँ। माया ।

सपना की बात सुनि राजा मगन भइलै—
बोली लिहले चतुर बम्हनवाँ, अरे सावनवाँ। माया ।

सपना कै फल शुभ, बिहँसि बखानै विप्र—
देवी गर्भ अइलै भगवनवाँ, अरे सावनवाँ! माया ।

सुनतै बचन सभी, आनन्द विभोर भइलै—
प्रेम आँसू छलके नयनवाँ, अरे सावनवाँ। माया ।

लचारी

[भगवान बुद्ध जी माँ के गर्भ मे]

माया के बुद्ध भगवान् हो गर्भ मे अइलें । टेक ।

धरती मगन होइ, सोनवाँ बरसावै लगलीं,
हरी चद्‌रिया लेहली तान, हो गर्भ मे अइल । माया

शीतल बयरिया वहै फल फूल डरिया सोहैं—
रचलैं पखेरवउ मगल गान हो गर्भ मे अइले । माया ।

नदियाँ सरोवर नाले निरमल जलधारे,
पर्वत मे मणियन की खान हो गर्भ मे अइलें । माया ।

भगवन के स्वागत हित बसुधा बदलि गइली,
दसवाँ महीना नगिचान हो गर्भ मे अइलें । माया ।

५

सोहर

[भगवान् बुद्ध की उत्पत्ति]

दसवाँ महीना नगिचइलै त,
महामाया सोचैली हो,
ललना चलबै हम पिता की नगरिया,
खबरि राजा पावैलँ हो।

तुरतै देव दह तक रहिया सीचवलै,
तोरन बधवचलई हो,
ललना बीच बीच कलस भरवले,
सगुन बइठवलई हो।

सोने की सवरिया तइयार करि,
रानी के सवार कइलै हो,
ललना सँग मे हजारो रखवरवा,
चतुर राजा भेजैलँ हो।

सजधज के डोलिया निकली,
बधाव लगलें बाजइ हो,
ललना देव गन मन ललचइले त,
रानी सग धावैलॅ हो।

देव दह के बीच ही डहरिया,
गरभ पीरा बाढेले हो,
ललना लुम्बिनि बन घन छहियाँ,
सवरिया टिकावैली हो।

शाल कै विशाल एक रखवा त
डरिया झुकाइ देहलै हो,
ललना देबी पकडि भइली ठाढि,
परम सुख पावैली हो।

धरती उमगि अनुरगली,
ले फुलवा बिछौलिन हो,
ललना घिरि गइली तुरत कनतिया,
महल छबि लाजैली हो।

तेहि छिन अइलै भुइँडोलवा,
हिलइ असमनवाँइ हो,
ललना बालक बुद्ध भगवान्,
धरनि पग धारैलॅ हो।

डरिया पकडि रानी ठाढ़ी,
मरम नहिं जानैली हो,
ललना जनमैलॅ जग रखवरवा,
सोहर सब गावैलीं हो।

देव गन फूल बरसाव लगल,
दुंदुभी बजावै लगलै हो,
ललना नाचै लगली उनकी तिरियवा,
नूपुर झहनावइँ हो।

बहै लगली शीतली बयरिया,
चिरइया लगली चहकन हो,
ललना थिरकै हरिनि नील गइया,
धरनि अनुरागैली हो।

धनि बइसाखी पुरनिमाँ,
मंगल दिन धनि भइलै हो,
ललना धनि भइली माया की कोखरिया,
किरति जग छावैली हो।

जिन एहि सोहर गइहइँ,
गाइ के सुनइहँइ हो,
ललना तिनकर जनम धनि होइहै
परम पद पइहँइँ हो।



(बाल लीला)

जेहि छिन जनम लियो धरती पर, पचो सुनहु बुद्ध भगवान,
सात डेग उत्तर दिशि चलि के, बोलेउ वचन सहित अभिमान।

"आदि पुरुष हमही को जानो, हमही सबसे श्रेष्ठ महान,
हमही सबकै विपति मिटइबे, करबै हमहि जगत कल्यान।"

बचन सुनत भगवन कै इतना, धरती माता लगी जुडान,
अधिक उछाह बढा लोकन मे, गह गह गह गह बजइ निसान।

जय जय जय बोलहि नर नारी, देव, पितर, गन्धर्व तमाम,
बरसि फूल माथा सब टेकै, सौ सौ बार करहिं परनाम।

खबर पाइ शुद्धोदन धाए, मन उमग कछु बरनि न जाय,
लुम्बिनि बन भगवन जहँ जनमे, पचो पल मे पहुँचे आय।

जगमग छबि निरखत लालन कै, लोभी नयना नही अघाय,
उधर देव आनद मनावै, वीणा, सख, मृदग बजाय।

देव बहू मिली मगल गावै, तोरहि इन्द्र पतुरिया तान,
झनन झनन नुपूर झहनावें, उधर मौन बालक भगवान।

चतुर देव प्रभु की रुख लखिके, बनि कँहार पालकिय सजाय,
देवी सहित तुरत भगवन को, कपिलवस्तु दिहलईं पहुँचाय।

परम मगन मन राजा होइ गए, उत्सव करहि न जाइ बखान,
धन दौलत, हाथी घोडन कै, लेखा नही दिए जो दान।

एहि विधि सतवाँ दिन जब अइलै, दुख की घटा गइल घहराय,
माया क तन पीडा बाढ़ल, आगिल कथा लिखल नहि जाय।

उधर सूर्य अस्ता चल गइलै, देवी गई देव गन धाम,
हाहाकार भयकर छाया, राज महल फैला कुहराम।

बाल्क बुद्ध मौन पलना पर, प्रजापती लईं गोद उठाय,
पालन करन लगी लालन कै, जइसे करत रही वह माय।

होतहि भोर असित मुनि अइलै, राजन उठकर कीन्ह प्रणाम,
अनुपम बालक मुनहिं दिखायौ, राखन कहेउ ललन कै नाम।

बत्तिस शुभ लच्छन तन लखिकै, ज्ञानी मुनि गये प्रभु पहिचान,
चरण चूमि गद्‌गद होइ बोले, "शिशु कै नाम 'सिद्धारथ' जान।

सिद्ध अर्थ बसुधा के करिहै, हैं यह तो सचमुच भगवान,
बुद्ध रूप धरि विचरण करिहै, हरिहै जग कर कष्ट महान।"

सुनि मुनि बचन मगन होइ राजन, बार बार निरखहि निज लाल,
चरन कमल चूमहिं नानाविधि, लूटहि छबि मन होइ निहाल।

आदर सहित बिदा करि मुनि को, राजन महल पहूँचेउ जाय,
पालन करन कहेउ लालन कै, तरह तरह कै साज सजाय।

राज महलिया मे रख वउलैं, खेल कूद के सर्वाहि समान,
पर भगवन मन एक न भावै, बइठै अलग लगा के ध्यान।

होनहार बिरवा जस बाढै, जइसे बढै दुइज के चान,
वैसइ बदन बढै भगवन कै, तन शोभा नहि जाइ बखान।

उधर प्रजा आनद मनावैं, सुख सम्पति बरसै दिन रात,
ऋद्धि सिद्धि उनई बसुधा पर, देखि देखि सुर लोक सिहात।

इसी भाँति दिन बीतन लागे, आठ बरस के भए भगवान,
पढन जोग लालन होइ गयऊ, अस राजन उर उपजा ज्ञान।

साइत सुघर तुरत सोधवा के, राज कुँवर कहँ सग लिवाय,
विश्वामित्र गुरू के आश्रम, चतुर भूप दिहलैं पहुँचाय।

बिविध भाँति गुरु पूजन करके, विद्या पढन लगेउ भगवान,
थोडेहि दिन मँह सब कुछ पढि गए, बुद्धि विलक्षण परम महान।

चौसठ विद्या के पडित भए, बत्तिस कला गये सब जान,
विश्वामित्र अधिक अनुरागे, जगत गुरुहिं मन मे पहिचान।

दोहा

विश्वामित्र प्रणाम करि बोलेउ धनि भगवान।
शिष्य हमारे होइकै, दियो हमे सम्मान॥

यहि विधि पढि गुनि के प्रभो, आएउ पितु के धाम।
मधुर मिलन चितवन सुखद, मूरति मृदुल ललाम॥

कपिलवस्तु रहने लगे, कोमल चित भगवान।
राज महल सुख मे अधिक लगै न उनका ध्यान॥

पूर्वी

[करुणा का परिचय]

करुणा घुमरि घिरि आइ रे, प्रभु कोमल हृदय मे । टेक ।
राजमहल सुख मनहि न भावै,
मनहिं न भावै,
चिन्ता जगत की समाइ रे, प्रभु कोमल हृदय में । करुणा ।

खेलै जो खेल सखन सँग प्रभु दें,
सखन सग प्रभु दे,
जीतल बजियौ जिताइ रे, प्रभु कोमल हृदय मे । करुणा ।

कथक प्रभु का परम प्रिय घोडा,
परम प्रिय घोड़ा,
एक दिन देहलै कुदाइ रे, प्रभु कोमल हृदय मे । करुणा ।

घोड़वा के तन देखि बोललै, पसीना,
बोललैं पसीना,
"पैदल चलब हम भाइ रे," प्रभु कोमल हृदय मे । करुणा ।

एकदिन देखलै बूढा किसनवॉ,
बूढा किसनवॉ,
धूपै मे करता जोताइ रे, प्रभु कोमल हृदय मे । करुणा ।
बूढ़े बयल हल खींचि न पावैं,
खींचि न पाव,
मारत पैना घुमाइ रे, प्रभु कोमल हृदय मे । करुणा ।
एकदिन हरिना पर साधे निसनवॉ,
साधे निसनवॉ,
गइली न तिरिया चलाइ रे, प्रभु कामल हृदय मे । करुणा ।
देवदत्त प्रभु का चचेरा जो भइया,
चचेरा जो भइया,
हसा पर तिया लगाइ रे, प्रभु कोमल हृदय मे । करुणा ।
जाकर तीर लगी पॅखिया मे,
लगी पॅखिया मे,
हसा गिरा चकराइ रे, प्रभु कोमल हृदय मे । करुणा ।
लोहुवालोहान विकल हसा लखि,
विकल हसा लखि,
भगवन लेहलै उठाइ रे, प्रभु कोमल हृदय मे । करुणा ।
कॉपत हाथ से तिरिया निकललै,
तिरिया निकललै,
जानल चाहै दुखदाइ रे, प्रभु कोमल हृदय मे । करुणा ।
ले तिरिया निज अग चुभवलै,
अग चुभवलै,
चीखै जगत सुखदाइ रे, प्रभुकोमल हृदय में । करुणा .. ।

अपने समान हंस दुखिया समझ के,
दुखिया समझ के,
रो रो कइलै दवाइ रे, प्रभु कोमल हृदय मे। करुणा ।

देवदत्त कहलै "दो हंसा हमारा,
हंसा हमारा,
इसको तो मैंने गिराइ रे," प्रभु कोमल हृदय मे। करुणा ।

बोले सिद्धार्थ "हंस होगा हमारा,
होगा हमारा,
करो न हमसे लड़ाइ रे" प्रभु कोमल हृदय मे। करुणा ।

आखिर ई बतिया सभा बिच अइली,
सभा बिच अइली,
निर्णय में होय कठिनाइ रे, प्रभु कोमल हृदय मे। करुणा ।

"जिउवा कै मालिक जो जिव को जिलावै,"
जिव को जिलावै,
बुढ़वा दिया बतलाइ रे, प्रभु कोमल हृदय में। करुणा ।

आखिर मे हँसा सिद्धारथ कै भइलै,
सिद्धारथ कै भइलै,
देवदत्त गइलै लजाइ रे, प्रभु कोमल हृदय मे। करुणा ।

हंसा की सेवा विविध विधि कइलै,
विविध विधि कइलै,
पालि पोसि देहलै उडाइ रे, प्रभु कोमल हृदय मे। करुणा ।

"सेवा से दुनिया कै दुखवा मिटइबै,
दुखवा मिटइबै,"
बोले प्रभो मुसुकाइ रे, प्रभु कोमल हृदय में। करुणा ।

दोहा

वर्ष अठारह के रहे, दया सिन्धु भगवान।
करुणा कलित किशोर वय चितवन म मुसुकान॥

'हरवति' का त्योहार था, शुद्धोदन महराज।
सोने का हल खेत मे, हाँक रहे ये आज॥

भगवन् ये देखन गए, ललकि पिता के सग।
कृषक रूप लखि नृपति को, भा पुलकित सब अग॥

इधर उधर टहलत लख्यो, तीतर कीड़े खात।
तीतर पर झपटन चहत, बाज स्वर्ग मेडरात॥

वही कही प्रभु पुनि लख्यो, मेढक केचुवन खात।
मेढक को निगलन चहत, सर्प लगाए घात॥

इसी बच मे मोर इक, गया कहा से आय।
देखत ही देखत वहीं, गया सर्प को खाय॥

सबल निबल का युद्ध इमि, प्रतिपल जग मे होय।
ज्ञान पुतरियन सो लख्यो, प्रभु हिरदय मे जोय॥

सुन्दर बगिया एक थी, लखि जामुन की छाँहिं।
ध्यान मगन प्रभु तँह भयो, सुधि तन की थी नाहिं॥

सूरज ढरक्यो पर नही, पुर पलट्यो युवराज।
चतुर दूत ढूढन चल्यो, अचरज देख्यो आज॥

उधर अटल छाया सुखद, इधर अटल भगवान।
तुरत नवायौ शीश सोइ, आदि पुरुष पहिचान॥

सब तरु की छाया फिरी, पर जामुन की नाहिं।
यह घटना सुनि सुनि सभी, अचरज करहिं सिहाहिं॥

घर आयौ युवराज जब, नृपति नवायो माथ।
महापुरुष लखि लाल को, चूमन लाग्यो हाथ॥

शुद्धोदन मन आज से, चिंता बढी महान।
मुनि की बात रात दिन, गूँजन लागी कान॥

देखि दुखित निज नृपति को, दीन्हेउँ सचिव सलाह।
राज कुवँर का आग्रही, करिए राजन व्याह॥

रचि अशोक उत्सव अभी, लेहु परीक्षा तात।
जिससे प्रम करें कुवँर, करहु व्याह की बात॥

प्रम और सुख के सभी, साधन देहु जुटाय।
कठिन फाँस फँसि के तनय सकहि न कबहुँ छुड़ाय॥

मन्त्री की मन मोहनी, मन्त्र हिए ठहराय।
शुद्धोदन नृप ने दई, डुग्गी तुरत पिटाय॥

है अशोक उत्सव महा, राज महल मे आज।
विविध वस्तु उपहार की, बाँटैंगे युवराज॥

चाँचरि*

[अशोक उत्सव]

उत्सव की बतया फइल गइल रजवा मे,
आवे लगली सजि सजि कुमारि।
बाटै लगलै तिन्है उपहरवा कुमरवा,
देखैं नाही अँखिया उघार॥

बँटि गइलै सब उपहार के समनवाँ,
पाइ गइली सकल कुमारि।
पिछवाँ से आइ गइली कुवँरि यशोधरा,
प्रभु देहलै अँखिया उघारि॥

---

* उत्सव की बतिया फइल गइल रजवाँ म, आवै लगली सजि सजि कुमारि। भले हो जोडी आवै लगलीं सजि सजि कुमारि छीयो राम छीयो ! आ छीयो राम छीयो !! इसी प्रकार प्रत्येक पक्तियो मे गाते है।

प्रभु लखि बोली मुसुकाइ के यशोधरा,
"मिलिहै हमै का उपहार।"
विहँसि बचन कहै प्रभु "सब बँटि गइलै,
तोहै देवै हिरदये कै हार" ॥

पिछले जनवॉ की प्रीति पहिचानि प्रभु,
कुँवरि पेन्हावै जय माल।
लखि लखि छवि भगवान् औ यशोधरा कै,
होइ गइलें सबहि निहाल ॥

प्रभु अरूदेवि जी के प्रेम की कहानी सुनी,
मगन भयउ महिपाल।
कुँवरि यशोधरा के पिता जी के पास पचो,
व्याह कै पठाइ दिहलै हाल ॥

सुनतइ बतिया प्रबुद्ध लिखै पतिया,
"व्याह कै वा हमरौ विचार।
दुनिया मे वीर जो होइ है कुमरवा,
बरिहै कुँवरि ललकार ॥"

पतिया पढत राजा दुखित बहुत भइलै,
"हमरे ललन सुकुमार।
केहि विधि मरिहै ई वीरन मे बजिया,
कइसे उठइहै हथियार ॥"

पिता के दुखित देखि भगवन धीरजदेत,
बचन कहैलॅ ललकार।

"दुनिया में वीर नाही बाटै न जनम्हिहै,
रहिया जो रोकिहैं हमार ॥"

बतिया सुनत मन-मगन शुद्धोदन,
सजलें बरतिया के साज ।
राजा सुप्रबुद्ध की नगरिया पहुँच गइलें
जहवाँ जुटैल युवराज ॥

बिरहा

[स्वयंवर और विवाह]

गौतम बुद्ध की बलिहारी, अब बधइया बाजै ले।
अब बधइया बाजै ले, अब बधइया बाजै ले ॥ गौतम०॥ टेक।

सज धज कर भगवान भी पहुँचे, जहाँ जुटे युवराज,
यशोधरा के बरने मे ही रहने वाली लाज—
जहाँ पर हुई विविध तैयारी, अब बधइया बाजै ले। गौतम० ॥

भगवन की मन मोहनि मूरति देखि भये सब दंग,
कितने अभिमानी युवकन के उतर गया सब रंग—
छिटकी कान्ति अलौकिक न्यारी, अब बधइया बाजै ले। गौतम०॥

सुप्रबुद्ध राजा ने उठकर प्रण अपना समझाया,
"महावीर जो हों वीरन मे बरै हमारी जाया"—
पौरुष दिखलाने की बारी, अब बधइया बाजै ले। गौतम०॥

सिंहहनु का महा धनुष था उठाके हारे बीर,
भगवन तेहि पर चढा प्रत्यंचा हुमकि चलाए तीर—
कौतुक कइलें छन मे भारी, अब बधइया बाजै ले। गौतम०॥

नागदत्त अर्जुन दोनो थे, अद्भुत नाम कमाये,
पर तीर चलाने मे प्रभु आगे, दोनो मुँह की खाए—
प्रभु सम नहीं कोइ धनुधारी, अब बधइया बाजै ले। गौतम०॥

तलवार वार दिखलाने म, प्रभु सिद्ध हुये बलकारी,
रथ हाँकन मे सिद्धारथ ने पल मे बाजी मारी।
आगे निकल गए ललकारी, अब बधइया बाजे ले। गौतम०॥

घोड सवारी करनी थी घोडा था दैत्याकार,
और सबो की कौन कहे, गए नन्दा अर्जुन हार—
भगवान तेहि पर किये सवारी, अब बधइया बाजै ले। गौतम०।

सब वीरो मे बढकर निकले शुद्धोद्धन के लाल,
यशोधरा मुसकाकर प्रभु को, पहिनावें जयमाल—
जगी फिर प्रीति अलौकिक न्यारी, अब बधइया बाजै ले। गौतम०।

सुप्रबुद्ध शुद्धोदन हँसि-हँसि प्रभु को हृदय लगावें,
गह गह गगग दुदभी बाजी, सुमन देव बरसावैं—
प्रमुदित प्रेममगन नर नारी, अब बधइया बाजे ले। गौतम०।

सुन्दर लगन देखि शुद्धोदन, प्रभु का किए विवाह,
सुप्रबुद्ध के आँगन मे उमडा तब अधिक उछाह—
तरुनी जब गावैं मगल गारी अब बधइया बाजै ले। गौतम०।

अनुपम विधि से व्याह हुआ प्रियतम दूल्हा दुलहिनियाँ,
किसी लोक मे वैसा मनहर देखा सुना कोई ना—
उपमा खोजि खोजि मति हारी अब वधइया वाजै ले। गौतम०।

विहँसि विहँसि दायज बहु दे नृप बिदा किये बारात,
दोनो समधी मिलै परस्पर प्रेम न हृदय समात—
जनता मोह मगन भइ सारी अब बधइया वाजै ले। गौतम०।

दोहा

यहि विधि व्याहि यशोधरा, प्रभु पलट्यो निज धाम।
कपिलवस्तु की गलिन मे, छवि लोटत अभिराम।



[प्रमोद भवन]

छाई छटा मन भाइ रे, प्रभु रग भवन मे। टेक।

तीनि महल नृप अनुपम रचवलै, अनुपम रचवलै,
लखि सुरलोकौ सिहाइ रे, प्रभु रग भवन मे। छाई०।

तीनउँ महल तीनो मौसम बसवलें, मौसम बसवलें,
भगवन् के रखलै लुभाइरे, प्रभुरग भवन मे। छाई०।

तीनउँ महल तीन बगिया लगवलें, बगिया लगवलैं,
कलियाँ खिलें मुसुकाइ रे, प्रभुरग भवन मे। छाई०।

तीनउँ महल तीन सरवर भरवलें, सरवर भरवले,
हँसा खेलें जहँ आइरे, प्रभु रगभवन मे। छाई०।

सरवर मे सुन्दर कमल सब विकसे, कमल सब विकसे,
शोभा बरनि नहि जाइरे, प्रभु रगभवन मे। छाई०।

नाचहि मोर कोइलिया गावै, कोइलिया गावै,
भँवरा दल सरगी बजाइरे, प्रभु रगभवन में। छाई०।

शीतल मद सुगन्ध तहाँ पै, गन्ध तहाँ पै ,
पवन बहै सुखदाइ रे, प्रभु रगभवन मे । छाई० ।
सावन सुख के सकल नृप जुटवलै, सकल नृप जुटवलै ,
राखेउ लग्न मन लुभाइ रे, प्रभु रगभवन मे । छाई० ।
गरमे गरम पकवान पठावैं, पकवान पठावें ,
मधुरस भागी मिठाइ रे, प्रभु रगभवन । छाई०
फल गोरस नित ताजा पठावें, ताजा पठावें ,
माखन मिश्री मलाइ रे प्रभु रगभवन मे । छाई० ।
चौदह सौ युवती भवन मे वसवलै, भवन मे वसवलै ,
जिनकी अजब सुघराइ रे, प्रभु रगभवन मे । छाई० ।
नित रस रग रचें मृगनयनी, रचे मृगनयनी ,
नाचे नूपुर झहनाइ रे, प्रभु रगभवन म । छाई० ।
तबला भी बाजे सरगी भी बाजे, सरगी भी बाजे ,
ओरउ बजे सहनाइ रे, प्रभु रगभवन मे । छाई० ।
भय चिन्ता दु ख शोक तहाँ पै, शोक तहाँ पै ,
सपनौ न परतै लखाई रे, प्रभु रगभवन मे । छाई० ।
जो चाहै प्रभु पावै छिनक मे, पावै छिनक मर्हे ,
देख न कोई कठिनाइ रे प्रभु रगभवन मे । छाई० ।
यहि विधि पचवाँ वरस नियरइलै वरस नियरइलै ,
प्रभु की जगी प्रभुनाइ रे, प्रभु रगभवन मे । छाई ।

दोहा

सहसा एक दिन रात मे, जागे जगदाधार ।
सुख मय अपना रहनि पर, करने लगे विचार ।

"क्या अदसइ सुख जगत म, पावै मत्रहि समान ?
बडे भोर चलि नगर म, हा देखा करि यान।"

इधर नृपति ने नगर म, डुग्गी दई पिटाय,
"राज कुँवर के माग मे, शुभ ही शुभ दरसाय।"

पर होनी थी ह्वै रही, भयो नृपति लाचार,
प्रभु फाँसन की युक्तियाँ, करै न एको कार।

प्रात काल उठिके प्रभो, छ दक लीन्हेउ टेर,
रथ पर चढि टहलन चल्यो तनिक न लायो देर।

ज्यो ज्यो प्रभु आगे बढै, करुणा बढती जाय,
इस असार ससार की, घटना घटती जाय।

कजली मिर्जापुरी

[विपत्ति दर्शन]

भगवान देखलन जो कुछ भइया, ओहु कै सुन वयनवाँ ना। टेक।

पहिले दिन टहलन प्रभु चललै, देखलन बूढा एक,
सूखी ठठरी झुकी कमरिया छडी सहारे टेक—
डगमग धरै चरनवाँ ना, चक्कर खात भँवर में नइया,
डगमग धरै चरनवाँ ना, भगवन देखलन जो कुछ ।

दुसरे दिन रोगी एक देखलै, साँस रहा था तोड,
इस असार ससार का पचो करता भण्डा फोड—
धन से भरा खजनवाँ ना, लागै एकौ नहीं दवइया,
धन से भरा खजनवाँ ना, भगवन देखलै जो कुछ ।

तिसरे दिन मुर्दा एक देखलैं, चारजने की काँध,
सुघर बदन को छिपा कफन में औरसरी से बाँध,
फूँकन चले मसनवाँ ना, रोवैं घर की लोग लुगइया—
फूँकन चले मसनवाँ ना भगवन देखलै जो कुछ ।

चौथे दिन सन्यासी देखलें, सुखिया परम स्वतन्त्र,
शान्त चित्त अनुपम चितवन से डाल्त मोहन मन्त्र—
देकर विमल गियनवाँ ना, हरता चतुरन की कठिनइया,
देकर विमल गियनवाँ ना, भगवन देखलें जो कुछ ।

दोहा

सन्यासी सुखिया निरखि, भगवन गए उभाय,
मन मोहन वह रूप जनु, मन मे गया समाय ।

हुँ प्रस न मन आज अति, आ बगिया भगवान,
करि स्नान परिधान सजि, बैठि लगायो ध्यान ।

उधर महल मे आज ही पु त्र रत्न जनमाय,
यशोधरा धनि धनि हुइ, जग मे मातु कहाय ।

समाचार लिखि पत्र पर, हो हर्षित महिपाल,
राज कुँवर पर्ह दूत कर, पठै दीन्ह तत्काल ।

पत्र पढत बोल्यो प्रभो, "शिशु मोहि राहु समान,"
'राहुल' नाम पडा तभी, गौतम, सुत जग जान ।

ज मोत्सव होने लगा, इधर महल मे आज,
उधर मौन धारे प्रभो, नहि भावै सुख साज ।

पुत्र ज म के सातवे दिन की आधी रात,
भगवन मन मे आ बसी अटल त्याग की बात ।

सयन करत निशि मे प्रभो, गए अचानक जाग,
अस्त-व्यस्त युवतिन निरख ओरउ बढा विराग ।

बूढे रोगी मृतक के चित्र चढे चित माहि ।
निद्रा बैरिनि हो गई, प्रभु सोचै मन माहि ॥

पूर्वी

त्याग (तर्ज विदेसिया)

वृद्ध रोगी मृतक के देखि के विकल बुद्ध,
मनवाँ मे करै ल विचार मोरे भाई जी।

जहाँ तक दुनिया मे बाटै जीव धरिया से,
होत बाटै इनकर शिकार मोरे भाई जी।

इहै गति होइहै कभी सुघर यशोधरा कै,
इहै गति होइहै हमार मोरे भाई जी।

जीवन मरनवाँ की घोर दुख दइया से,
पावै नाही कोई जीव पार मोरे भाई जी।

इनसे बचै क कवनो ढूढबै उपइया से,
छानि डलबै बन औ पहार मोरे भाई जी।

दुनिया के सुख हित तजबै महलिया से,
तजि देबै माई के दुलार मोरे भाई जी।

पिता कै पियार तजि बनबै फकीरवा से,
तजि देबै राज परिवार मोरे भाई जी।

सुन्दर सुघर पुत्र गोदी ना खेलइबै से,
तजबै यशोधरौ कै प्यार मोरे भाई जी।

राजसी पोशाक तजि, चिथडा लपेटबै से,
तजि देबै ताज, हीरा-हार मोरे भाई जी।

भिखिया के सूखा रूखा अन्न हम खइबै से,
तजि देबै सोनवाँ की थार मोरे भाई जी।

धरतिहि सेज पखा पवन हमार होइहैं,
घर गिर खोह, टीला, झार मोरे भाई जी।

रहली अषढवा की तिथि पुनवसिया से,
त्याग हित प्रभु तइयार मोरे भाई जी।

सझवै से अन पानी तजि के बइठलै से,
प्रति छन लागै घर भार मोरे भाई जी।

सुनि के खबर राजा रोई रोई मनवलै से,
भावै नाही मन जेवनार मोरे भाई जी।

होइ के दुखित नृप पहरा बइठवलै से,
हनि देहलै बजर किवार मोरे भाई जी।

अपने सजग होइ छेकलै दुवरिया से,
भइया उनकर छेकलै बजार मोरे भाईजी।

ठीक आधिरतिया के भगवन चलन चाहै,
मन बसल जग उपकार मोरे भाई जी।

प्रभु रुख पाइ देव कइलै उपइया से,
बहै लगली शीतलि बयार मोरे भाई जी।

निदिया बिभार भइलै कुलि रखवरवा से,
खुलि गइली रुँधलि दुवार मोरे भाई जी।

लहि शुभ घडियाँ पलँग तजि खडा भइलै,
माया मन घिरली अपार मोरे भाई जी।

पीपर के पात जइसे काँपत करेजवा से,
थर थर पग थहराय मोरे भाई जी।

कुछ छिन खातिर प्रभु दरिऐ ठिठकि गइलै,
राज सुख तजलौ न जाय मोरे भाई जी।

तनिकै मे कसि के धीरज फिर बधलै से,
माया नाही सकली डिगाय मोरे भाई जी।

डगमग पग धरि अगवाँ बढन लागे,
पुत्र-प्रेम छेकै मग आय मोरे भाई जी।

"चलती की दइयाँ पुत्र हृदय लगाय लेही,"
अस मन गइलै समाय मोरे भाई जी।

दबे पाँव पहुँचे यशोधरा महलिया से,
देखें छवि कवरे लुकाय मोरे भाइ जी।

फूलन की सेजिया पर सयन करत देवी,
जगमग दीपक जलाय मोर भाई जी।

सुघर खिलवना सा अनुपम बलकवा के,
आधा अंग अँचरे छिपाय मोर भाई जी।

चाँद सा मुखड़वा निरखि प्रभु लालन के,
चूमल चाहे गोदिया उठाय मोरे भाई जी।

पर डर लागे "कहीं जगली यशोधरा तै,
सकवै न इनसे छोड़ाय" 'मोरे भाई जी'।

अस जिय जानि प्रभु रोकले सनेहिया से,
चितवत चले ललचाय 'मोरे भाई जी'।

चुपके से चलि आगे 'छदक' जगवलै से,
'कथक' के लेइलें मँगाय 'मोरे भाई जी'।

प्रभु कै मरम जानि कथक विकल मन,
रोवै, भुइँ खोदै, हिहिनाय 'मोरे भाई जी'।

घोड़वा की टाप सुनि जागे न पहरवा से,
देव कइलै अजब उपाय 'मोरे भाई जी'।

भगवन की रहिया मे फुलवा बिछवलै से,
रोपै खुर हथवा लगाय 'मोरे भाई जी'।

*कथक पर चढि प्रभु वन के निकलले से ,
†छदक, लगल सग जाय 'मोरे भाई जी' ।

आगे-पीछे, दाये बाये चार के मशाल चले,
देव गन मन हरषाय मोरे भाई जी ।

तीन राज पार प्रभु रातै रात चलि गइलें ,
नदिया अनोमा गइली आय 'मोरे भाई जी' ।

छदक जकडि पूँछ कथक के धइलें से ,
प्रभु देहलें तुरतै फँदाय 'मोरे भाई जी' ।

नदिया के पार जाइ भगवन उतरलै से ,
कहे प्रिय छदक सुनाय 'मोरे भाई जी' ।

''जनम के साथी मोरे घोडवा ले घर जइहा,
कहिहा सदेसवा बुझाय 'मोरे भाई जी ।

होइ बुद्ध जग मे घूमत कभी अइबै से ,
''भेटबै सबहि सिर नाय'' 'मोरे भाई जी' ।

अस कहि केस तलवार से कतरि रूप ,
लेइलें सन्यसिया बनाय मोरे भाई जी ।

इन महाब्रह्मा बस्त्र साधुन के प्रभु ढिग ,
छनवै मे गइलैं लेके आय 'मोरे भाई जी' ।

राजसी पोशाक, ताज, हार, हीरा मनियन कै,
डरिया पर दिए लटकाय 'मोरे भाई जी' ।

---

* कथक सारथी का नाम था । इसका जन्म भी जिस दिन सिद्धार्थ का हुआ था उसी दिन हुआ था ।

† यह राजकुमार का घोडा था । इसका जन्म भी उसी दिन हुआ था ।

सोनवाँ सी देहियाँ पर गेरुआ लपेटि प्रभु,
भिक्षा पात्र लिहलै उठाय 'मोरे भाई जी'।

प्रभु कै विरागी रूप देखि रोवै छन्दक से ,
कथक कै दु ख न लिखाय 'मोरे भाई जी'।

गहि के चरन रोइ विनय करत छन्दक ,
लागि नाही एकहू उपाय 'मोरे भाई जी'।

प्रभु के प्रणाम करि घोडा सग चलि भइलै,
छदक रोवत बिलखाय 'मोरे भाई जी'।

बिचही डहरिया वियोग ठेस लगली से ,
कथक गिरैलँ भहराय 'मोरे भाई जी ।

प्रभु बिनु तजि दिहलै अलहरै परनवाँ से ,
छदक विकल पछताय 'मोरे भाई जी'।

रोइ रोइ करत विलपवा नगर अइलै ,
साँझ बेला गइली नियराय 'मोरे भाई जी'।

राज परिवार रोइ छदक के घेरि लिहलै,
नृप की दशा न कहि जाय 'मोरे भाई जी'।

त्याग की कहनियाँ कहत छन्दक रोइ रोइ,
सुनै सब अँसुवा गिराय 'मोरे भाई जी'।

कथक मरन की कहन लागे बतिया से,
मचि गइली तहाँ 'हाय हाय' 'मोरे भाई जी'।

प्रभु के मिलन की मधुर आस मनवाँ मे,
इहै सबै रखली बचाय 'मोरे भाई जी'।

दोहा

कपिल वस्तु जब तक रहे, प्रभु जनु था ऋतु राज,
त्याग ग्रीष्म ऋतु सम दुखद, करुणा पावस आज।

नयन जल्द बरसत मनहुँ, शोक सिंधु लहराय,
मग्न होत पुर लोग जनु, 'आशा' भई सहाय।

परम व्यथित पुर लोग इत, उत त्यागी भगवान,
बाग अनुपिया सात दिन, बैठि जमायो ध्यान।

पुनि रैवत ऋषि भेंटि करि, आगे कीन्ह पयान।
जाय राज गृह भीख लहि, भोजन किय भगवान।

विरहा

[धम की खोज, तपस्या तथा सुजाता की खीर]

हाँ माया के ललना, हे माया के ललना—
तजलै माया की नगरिया माया के ललना ॥ टेक ॥

राज पाट सुख छोड पिता माता से मुँह को मोड,
राज महल, राहुल, राहुल माता, से नाता तोड—
भइलै दर-दर कै भीखरिया माया के ललना। तजलै ।

राज गृह या पटना की गलियन मे भगवन आये,
"भिक्षा हित भोजन दो बाबा" मधुरी अलख लगाये,
सुनि लोभइलीं नर औ नरिया माया क ललना। तजलै ।

बिम्बसार राजा सुनि आए, बिनती किए अनेक,
राज पाट सब देन चहै पर भगवन तजैन टेक,
धइलैं जंगल की डहरिया माया के ललना। तजलै ।

मगध के बीहड वन पर्वत मे मिले प्रभुहि बहु ज्ञानी,
आचार्य अलार कलाम और रुद्रक उनको सनमानी,
दहलें ज्ञान की गठरिया, माया के ललना। तजलें ।

थोडे दिन मे उचट गया मन चललें भगवन आगे,
पॉच शिष्य रुद्रक के उत्तम मनमोहन सँग लागे,
रहलें ब्राह्मण ब्रह्मचरिया माया के ललना। तजलें ।

तप करने की साध लिए प्रभु गया ओर बढि गइलें,
गय शीर्ष पर्वत पर होते उरुवेला मे अइलें,
पवले सुन्दर एक ठहरिया माया के ललना। तजले ।

चट पट आसन लगा के भगवन भए ध्यान लवलीन,
छ वर्षो तक पानी पी पी कठिन तपस्या कीन्ह,
मिटली तन की सब चीन्हरिया माया के ललना। तजलें ।

बत्तिस लच्छन सहित मिटा वह रूप रहा बस नाम,
सूख गई सोना सी देहियॉ, सटा हाड मे चाम,
चाहे गिन ले जो ठठरिया माया के ललना, तजलें ।

वह हड्डी की ढेर अचानक गिरी भूमि भहराय,
दु खद दशा लखि महा प्रभो की गए शिष्य घबराय,
गाढी भइली मन फीकिरिया माया के ललना। तजलै ।

इसी बीच मे भगवन बोले "सुनो सुनो ऐ चेला?
घोर तपस्या करना भी है केवल व्यर्थ झमेला,
कइली नाहक हम रगरिया" माया के ललना। तजलै ।

बेहद काया क्लेश और बेहद सुख दोनो छोड़,
बीच डहरिया चलि हम करबै दुख कै भंडा फोड़,
कटली माया की फँसरिया" माया के ललना। तजलै ।

लगे भीख करि भोजन करने इक बेला भगवान,
इधर शिष्य पाँचो संग तजि के, काशी किए पयान,
हँसि हँसि मारै किलकरिया माया के ललना। तजलै ।

निरंजना या फाल्गू तट पर बट तर बसि भगवान,
सत की खोज करे नाना विधि लगा लगा के ध्यान,
हरियर भइली सब सरीरिया माया के ललना। तजल ।

बट पूजन लै खीर 'सुजाता' वहीं एक दिन आई,
भगवन को वह देव समझ कर फूली नहीं समाई,
प्रभु जी हँसि हँसि खइलै खीरिया माया के ललना। तजलै

धन्य धन्य हो गई सुजाता प्रभु को खीर खिलाई,
श्रद्धामय उपहार खाय प्रभु सत परखेऊ हरषाई,
लुटली चिन्ता की बजरिया माया के ललना। तजलै ।

ग्राम्य-गीत फाग

[मार विजय]

मोर महतमा, मोरे महतमा मोरे महतमा हो,
बोधि विरिछ की छहियाँ धइलै ध्यान, मोरे महतमा हो ॥ टेक ॥

बैसाखी पुरनिमा की रहली, टहटह उगल जोन्हइया हो,
बन कै फूल गमागम गमकत, सगबगात पुरवइया हो,
सत की खोजिया करत मगन मन, मन मोहन भगवान—
मोरे महतमा हो ॥ बोधि०

इसी बीच मे 'मार' नीच, पपिया रचलस उतपतिया हो,
हाव भाव मे कुशल कामिनी, करन लगी रसबतिया हो,
पर प्रभु बैसइ अटल राह पै, जइसे मुदलै कान—
मोरे महतमा हो ॥ बोधि०

हार देखि होइ क्रुद्ध 'मार' लै पलटन किया चढाइया हो,
काम क्रोध मदलोभ द्वेष, छल, इरषा सुभट सिपहिया हो,
अस्त्र शस्त्र बेकार हुए प्रभु बइठे सीना तान—
मोरे महतमा हो ॥ बोधि०

अब की बार कुपित होइ भेजलस, आँधी और तुफनवाँ हो,
भई मूसला धार वृष्टि अरु, तडतडात असमनवाँ हो,
टूट टूट तरु भूपर ढहले, पर प्रभु अचल समान—
मोरे महतमा हो ॥ बोधि० ॥

चौथी बार भूत सब अइलै, भेष भयंकर धइलें हो,
मुँह से अगिया उगिल उगिल खल, कठिन उपद्रव कइलें हो,
भव भय हारी करत धियनवाँ, लै मधुरी मुसकान—
मोरे महतमा हो ॥ बोधि० ॥

होकर परगट अधम मार अब, करन लगा छेडखनियाँ हो,
समझाए जब एक न मनलस, भगवन छुए जमिनियाँ हो,
शब्द भयंकर हुआ तुरत खल, सुनकर गिरा उतान—
मोरे महतमा हो ॥ बोधि० ॥

लखकर विजय विचित्र देव सब अति आनन्द मनवले हो,
नन्दन वन से सुमन सुगंधित प्रभु ऊपर बरसवले हो,
मंगल पाठ पढहि जय जय कहि गह गह हनै निसान—
मोरे महतमा हो ॥ बोधि० ॥

दोहा

पाकर विजय विचित्र प्रभु, डूबेउ गहरे ध्यान,
सुखद शान्ति मय रात्रि मे, सोधेउ सुख की खान।

१५

जोगी-गान

[ज्ञान प्राप्ति]

आजु सुनहली, रतिया ए माई। टेक।
वैसाखी पुरनिमा की महिमा, दिन दिन दुनिया गाई—
जब तक रहिहैं, चाँद सुरजवा, सुधिया नाहि भुलाई। आजु०।

चढतै पहिला, पहर मार की, सेना दूर पराई—
पाकर शान्ति, मगन होइ प्रभु ने, चारहु ध्यान लगाई[†]। आजु०।

[‡]चारहु सत्य, प्रगट लखि गइले, मनवाँ गयल अघाई—
बोध गया ओहि, पीपल निचवाँ, पवल्न अमर कमाई। आजु०।

पहला पहर, बीततै बीतत ज्ञान किरन इक आई—
सचराचर की, गति मनमोहन, लखन लगेउ मुसकाई। आजु०।

[†]ध्यान की चार अवस्थाएँ—(१) सवितर्क ध्यान, (२) अवितर्क ध्यान (३) निष्प्रीतिक ध्यान, (४) अदुःख सुख ध्यान।

[‡](१) दुःख, (२) दुःख का कारण, (३) दुःखो का निरोध, (४) दुःख निरोध के उपाय।

दुसरे पहर, ज्ञान की दूसर, ज्योति गए प्रभुपाई,
जनम जनम की, सुधिया जागी, सोचहि ध्यान डुबाई। आजु०।

छन मे ही प्रभु, समझ गए सब, सकार प्रभुताई,
पिछले जनम की, आपन करनी, भोगत वा सब आई। आजु०।

तब के बोवल अब सब काटै, अब कै आगे आई—
सुख दु:ख के उपजावन में सब, परम स्वतन्त्र लखाई। आजु०।

तिसरे पहर, ज्ञान की तिसरी, जोतिया हृदय समाई,
बिनु कारण कोइ, काम न होता, प्रभु को पडा लखाई। आजु०।

उसी समय, 'अज्ञान' दु:खो की, जड परखेउ लवलाई,
एक 'वासना', के चक्कर मे, देखेउ जग भरमाई। आजु०।

चौथे पहर, ज्ञान की चोथी, ज्योति जगामग आई,
पूर्ण बुद्ध हो, गए महाप्रभु, जय जय की धुनि छाई। आजु०।

पाकर परमा, नन्द प्रभो ने, सुन्दर वचन सुनाई—
"हेरत कोटिन जन्म कष्ट सहि, गृह कारहिं गए पाई। आजु०।

हुआ वासना हीन हृदय अब, सस्कार मिटि जाई—
जन्म मरण का फेरा छूटा, कटी फॉस दु:खदायी।" आजु०।

दोहा

इसी भॉति निर्वाण पद, प्राप्त किए भगवान्,
सुखही सुख जहँ बसत है, दु:ख को नही निसान।

होत वासना हीन मन, हाय हाय मिट जात,
जन्म मरण की फॉस जहॅ, अनायास कटि जात

थल विशेष 'निर्वाण' नहि, है मन की गति एक,
जहॉ वासना हीन मन, रखता विमल विवेक।

पाकर चारो ज्योति प्रभु दु ख लीन्हेउ पहिचान,
दु ख के कारण भी वही, आएउ उनके ध्यान।

दु ख निरोध की बात पुनि, मन मे गइ समाय,
दु ख मेटन के अ त मे, सूझेउ आठ उपाय।

सत्य कर्म, व्यवहार सत, उच्च लक्ष्य, मृदु बैन,
सत सेवा, विश्वास सत, सत्य ध्यान धरि नैन।

सद्‌उपयोगी बुद्धि युत, 'अष्ट चक्र' निर्वाण,
ले अमृत बॉटन चल्यो, अब भक्तन के प्राण।

लचारी

[सारनाथ का सार]

बाबा बॉटै चलले जनम की कमइया ना ॥ टेक ॥

पहिले मन मे बात समाइल, गुरुन पास हम जाई,
ज्ञान कै अमृत उन्हें पिला के, जीवन सफल बनाई—
बाकी जीयत नाहीं पवलै ओहि समइया ना । बाबा० ॥

उसा समय हिरदय मे अइलें, विठ्ठल पाँचो चेला,
सारनाथ जो करत साधना, प्रभु को छोडि अकेला—
उलटै करत फिरै उनकर चुगुलइया ना । बाबा बॉटै ।

फूट पडी करुणा की धारा, लेने लगी हिलोर,
आतुर हो मन मोहन बढलै ऋषि पत्तन की ओर—
केवटा गगा तीरे मॉगै उतरइया ना । बाबा बॉटै ।

"भिक्षु पास कुछ धन नहिं रहता," बोल उठे भगवान,
आसमान होइ पार उतरलै अचरज हुआ महान,
केवटा झखै लागल लेइके आपन नइया ना । बाबा बॉटै ।

भिक्षा-भोजन करि काशी प्रभु, सारनाथ नियरइलै,
सुन्दर छटा देखि जगल की, परम प्रफुल्लित भइलै—
कलियाँ चुटके झुर झुर वहै पुरवइया ना। बाबा बाँटै ।

भँवरा सरगी साज रहे, कोइलिया तान लडावै,
घूमि झूमि कबूतर "घूटुर, घूँ" तबला घुटकावै—
मोरवा नाचे औरउ चहके कुाल चीरइया ना। बाबा बाँटै ।

रग-बिरगे खरहा फुदकै, साँभर सींग लडावैं,
थिरक थिरक हरिनी के बच्चे प्रभु के आगे आवे—
चिहरै घसियन पर लाखो नील गइया ना। बाबा० ।

इसी तरह वन की शोभा, प्रभु देखि देखि हरषाते,
सारनाथ के कण-कण पर, अनुपम करुणा बरसाते—
परगट कइले पल मे आपन प्रभुतइया ना। बाबा० ।

जगमग ज्योति जगी प्रभु अग से, लोक लोक मँह छाई,
जड चेतन आनद मगन, दु ख नरकउ नाहि लखाई—
अमृत लूटन वाले दौडे करि उपइया ना। बाबा० ।

इतने ही में पाँचो चेलवा, गए प्रभुहि पहिचान,
चकाचौंध हो उनके आगे, अइले तजि अभिमान—
कोमल चरणन की लेवैं, सब बलइया ना। बाबा० ।

सिहासन एक प्रकट हुआ, प्रभु बइठे आसन मार,
सारनाथ की महिमा बढली, अजब लगा दरबार—
देवता जय जय बोलै हनै सब बधइया ना। बाबा० ।

ब्रह्मा, देव, मनुज, किन्नर, विद्याधर, जोगी आए,
प्रभु चरणो मे शीश झुका, बैठे टकटकी लगाए—
सब ही धरमामृत कै रहलै लुटवइया ना। बा॰।

दोहा

सारनाथ वह धय है, जहाँ जगत रखवार,
धर्मामृत वितरण कियो, जग मे पहिली बार।

१७

लचारी

[धर्म चक्र का प्रवर्तन]

वाबा खोलै लगलै ज्ञान की गठरिया ना। टेक।

पाँचो चेलवन कँह सम्बोधित करि बोले सरकार,
"अतिसय सुख या अतिसय तप करना दोनो बेकार—
सुख बा सचमुच भरल, बीचै की डहरिया ना। वाबा ।

जन्म, बुढापा, रोग, मौत ओ इच्छा पूर्ति न होना,
पहिला सत्य यही 'सब दु ख' है, पडता जिनसे रोना—
ईहै तोरत बाटै सब ही की कमरिया ना। वावा ।

जन्म मरण के चक्कर मे पड़ि, चीख रहा ससार,
इस चक्कर को खूब चलावै लालच ही ललकार—
सत् वा दूसर देखा 'तृष्णा' भरि नजरिया ना। बाबा ।

तृष्णा ही सस्कार बनावै जीवो को भरमावै,
दु ख की गठरी हर जीवन मे हँसि हँसि के पहुँचावै—
रचले बाटै ईहै माया की बजरिया ना। बाबा ।

तृष्णा के जब मार भगावै, सस्कार मिट जावे,
फिर तो इस 'गोरखधधा' मे, काहे के कोइ आवै—
सत बा तीसर ईहै काटै कुल फँसरिया ना। बाबा खोले

दुख मेटन की अनुपम विधि मै चौथा सत्य बताऊँ,
'अष्ट मार्ग' निर्वाण प्राप्ति का सबको सुलभ बनाऊँ—
जिस से सहजै छुटिहै माया की नगरिया ना। बाबा खोलै

सत्य कर्म, व्यवहार सत्य हो, उच्च लक्ष्य, मृदु बोली,
सत् सेवा, विश्वास, सत्य हो, सत्य ध्यान की झोली-
होवै सदुपयोगी बुधियौ बेफीकिरिया ना। बाबा खोलै

इसी तरह जो सत्य, अहिसा, त्याग प्रेम, अपनइहे,
ऊँच नीच कै भेद मिटा जग, सबको गले लगइहै—
मिटिहै दुखवा नाही रहिहै कोरि कसरिया ना।" बाबा खोलै

दोहा

ज्ञानामृत करिपान सब, होइ आनद विभार,
बुद्धधर्म का जगत म, लग मचावन शोर।

इधर बुद्ध भगवान ने, पथ 'निर्वाण' लखाय,
पॉचो चेलवन का लिया छोटा सघ बनाय।

नयकवा

[संघ निर्माण]

सुखवा की सुनि सुनि, सुघर कहनियाँ हो,
निति हो गयनियन की भीर जी।
करुणा में पगि पगि, कोमल महतमा हो,
हरै जनमवन की पीर जी।

काशी नगरिया कै, जस्स धनिकवा हो,
बुद्ध सरन गहलै आय जी।
जनम मरनवाँ की, गहरी सँसतिया से,
भगवन देहलै बचाय जी।

तीन महीना ऋषि, पत्तन के मृगदाव,
बनवाँ में कइलै प्रभुजी वास जी।
यहि विधि सारनाथ, धनि धनि होई गइलै,
बनलै सुघर इतिहास जी।

पहिलै प्रथम संघ, प्रभुजी बनवलै हो,
करैं धरम परचार जी।

पहिले के पाँचो चेलवन, सहित सब एकसठ,
भेजलैं हरन के मुइँ कै भार जी।

अपने त प्रभु जी चललै, मगध के रजवा मे,
नेवति बुलवलै महराज जी।
बीच डहरिया मे तीस कुमरवा हो,
गहले सरन तजि लाज जी।

तीसौ ई रहलै हो क्षत्रिय वरनियाँ क,
राजघरनवनकै नाज जी।
वेश्या को ढूढन वाले, भगवन को पाई गइल,
नयना सुफल भइलै आज जी

भगवन कै चेला बनि, गइलै कुमरवा हो,
सग मे लगैलै हरषाय जी।
नदिया निरजना के, तीरे बीहड बन,
मिललै काश्यप तीनो भाय जी।

एक हजार ब्रह्म, चरिया पढत रहलै,
अग मे भभूतिया रमाय जी।
भगवन की देखि मन, मोहनी मूरतिया हो,
सब ही घेरलै हरषाय जी।

जन रुचि जानि प्रभु, आसन जमवलै हो,
विषधर गयल एक आय जी।
चुपके से भय हारी, भगवन के बरतन मे,
बइठल फनवाँ छिपाय जी।

दिन रात आसरम के, सँपवा डेरावत रहलै,
भगवन देहलै भगाय जी।

अचरज खाइ सब, भगवन के निरखै हो,
बोले प्रभोजी मुसुकाय जी।

"तृष्णा के जीति सुख असली कमाइ लेहु,
व्यर्थ पडे हो मायाजाल जी।
ईहै पापिनि सारे अनरथ की जड बाटै,
ईहै बा दुःख, ईहै काल जी।

तृष्णा मिटाए बिना, जप तप पूजा पाठ,
रहि जइहैं 'कोरा ठठपाल' जी।'
अमृत वचन सुनिके, प्रभु के सरन भइलैं,
होइ गइलै सबही निहाल जी।

सबही के सग आगे, चललैं महतमा हो,
गयशीर्ष गिरि पर गइलैं आय जी।
भक्तन के सग प्रभु, करैं विहरवा हो,
कहैं कथा औ इतिहास जी।

एक दिन लगल देखलैं, बनवॉ मे अगिया हो,
बोलैलॅ भगवन विचार जी।
"काम औ क्रोध, मोह, इरषा की अगिनि से,
जरत बा सब ससार जी।

जइसे बरखवा ई अगिया बुझइहै हो,
वैसइ बा रहिया हमार जी।"
कुछ दिन रहि राज, गृह के पयान कइलै,
लॉघत बन औ पहार जी।

चेलन सहित वीहड, रहिया खतम कइलें,
मजिल त गइलें नियराय जी ।
मनवॉ लुभावन लट्ठी, *वनवॉ मे वास कइल,
यहिजॉ से राज गृह लखाय जी ।

मगध के राजा विम्ब, सार, खबर पवलें,
दरसन के जीया ललचाय जी।
सग मे हजारा उनके बुध जन, वम्हनवॉ औ,
वनिकन कै चलल समुदाय जी ।

भगवन की बॉकी झॉकी, लखतै लोभइलैं सव,
नयना सुफल कइलें आय जी ।
श्रद्धा मे सनि सनि, सबही बइठेलें हा,
भगवन देहलै गियान जी ।

तनिकै मे सबही की, ॲखिया उघरि गइलीं,
होइ गइली सत की पहिचान जी ।
भगवन कै चेला बनि, गेरुवा पहिनलैं सब,
कइसे हो शोभा कै वखान जी ।

चहल पहल भइलें, राजगृह नगरिया मे,
होइ गइलैं सुख कै विहान जी ।
शिष्यन सहित प्रभु के, भोजन करवलें राजा,
राज महलिया बुलाय जी ।
र रम मनोहर वेणु, वनवॉ समर्पित कइलें,
सघ के मन हुलसाय जी ।
'सजय' के चेला रहलै, दो सौ पचास, ऊहौ,
भगवन कै चेला भइलै आय जी ।

---

* मुलेठी का वन ।

उनहा मे 'मौग्दलायन', 'सारिपुत्र' रत्न दोनो,
गइलैं श्री प्रभु जी मोरे पाय जी।
राम के दल मे जइसे, हनुमत औ अङ्गद रहलै,
वैसइ ई प्रभु कै दोनो दास जी।
भगवन की रहिया दोना बढि बढि बतवलैं सबै,
भुलिहैं न उनकै इतिहास जी।
भगवन की चर्चा सुनि, 'भद्रा' और 'माणवक' अइलै,
पति पत्नी कइलै अनुपम त्याग जी।
राजगृह नालदा बीचे, वरगदके नीचे दोनो,
पाइ गइलैं प्रभु कै अनुराग जी।
महाकश्यप नाम, माणवक कै धइलें भगवन,
भद्रा कै राच दिहलै भाग जी।
भद्रा भिक्षुणियाँ बनि, के धर्म प्रचार कइली,
तजि देहली सुख औ सोहाग जी।
यहि विधि वेदवन कै, सुन्दर पढवइया महा-
'कात्यायन' अइलै प्रभु के पास जी।
भगवन कै चेला प्रियतम, बनि कै उज्जैनी गइलै,
कइलैं धरम कै परकास जी।

दोहा

यहि विधि भिक्षुक सघ मे, आए सब विद्वान।
मिलि मिलि प्रभु की राह चलि, किए जगत कल्यान॥
सघ नियम निरमाण करि, कीन्ह घोषणा आप।
"पुण्य सभी सचय करो, त्याग करहु सब पाप॥
निर्मल और पवित्र बनि, पुण्य कार्य ल्वलीन।
सब पापो का त्याग करि, विचरण करो प्रवीन॥"



[वनि विदेसिया]

(कपिल वस्तु मे गमन)

भगवन के गुन जस, कीरति बडइया कै,
सुनले नृपति जब हाल 'रे गियनियाँ'।
अँखियन मे प्रम आँसू, छल छल छलकै से,
होइ गइलै विकल भुवाल 'रे गियनियाँ'।

सचिव सहित सेना, सजि के हजार भेजि,
बोललै "ले जाओ मोरे लाल" 'रे गियनियाँ'।
सबही मुदित मन, प्रभु ढिग गइलै से,
छवि लखि भइलै निहाल 'रे गियनियाँ'।

भगवन की रहिया पर इत सब चलि भइलै
उत राजा भइलै वेहाल रे गियनियाँ।
एक बार नाहीं, नव नव बार वैसइ,
भेजि के बुलावा गइलै हार रे गियनियाँ।

जोड़ जोड़ जावे, आपन मुड़वा मुड़ावै,
रूप त्यगिया बनावै हर बार रे गियनियाँ।
अन्त म विकल होइ, *काल उदाइन संग,
सेना फिर भेंजलैं हजार रे गियनियाँ।

ढाढस बँधाइ महा, मत्री विदा भइले से,
चलें मग मगन अपार रे गियनियाँ।
रहँस विहँसत, प्रभु ढिग अइलैं से,
रीझि गइलैं रुपवा निहार रे गियनियाँ।

सेनवाँ सहित प्रभु सघ मे समाइ गइलं,
तजले सकल घर बार रे गियनियाँ।
एक दिन लखि शुभ, सुघर समइया से,
'उदयिन कहेलें समझाय रे गियनियाँ।

"एक ही ठहरिया, बहुत दिन ठहरब,
सघ के न उचि त लखाय" रे गियानयाँ।
भिक्षुन के घूमि घूमि करब प्रचार फबै,"
प्रभु कहें "भलि तोरि राय" रे गियनियाँ।

चतुर सचिव कपिल वस्तु ओर चलने की,
चरचा भी देहलै चलाय रे गियनियाँ।
दुखित यशोधरा, नृपति, पुर लोगवन की,
यदिया भी दिहललै दिलाय रे गियनियाँ।

सवटी की ओर देखि हँसि प्रभु कहलें से,
"देहु चलि खबर जनाय रे गियनियाँ।

---

* काल उदाइन भगवान का बाल सखा था और महाराज शुद्धोदन का महामंत्री।

भिक्षुन सहित हम चलवै नगरिया से,
देबै शुभ रहिया बताय" रे गियनियाँ।

मन मे उछाह भरि उदयिन चलि भइलै,
देहलै सँदेसवा सुनाय रे गियनियाँ।
सूखतइ धनवाँ पर पनियाँ परल जनु,
सबही गयल हरियाय रे गियनियाँ।

भगवन के स्वागत हित भइ तइयरिया से,
सजले बजार पुर हाट रे गियनियाँ।
सुधरि यशोधरा सहित परिवार पुर,
लोगवा ललकि जोहै बाट रे गियनियाँ।

चौका पुरावै, द्वारे कलस भरावै सब,
तोरन बँधावै हरषाय रे गियनियाँ।
झुँकि झुँकि खिरकिन से निरखैं यशोधरा से,
प्रेम आँसू छलकत जाय रे गियनियाँ।

पेडवा पर चढि चढि रहिया ताकत केते,
पूछै मग धाय जो देखाय रे गियनियाँ।
नित नई नई तइयरिया करहि सब,
चुनि चुनि नेहियाँ लगाय रे गियनियाँ।

बीस सहस सग साधुन सहित उत,
भगवन कइलै पयान रे गियनियाँ।
जोजन-जोजन पर डालत पडउवा से,
अइलै नगर नगिचाय रे गियनियाँ।

धुलिया उडत नभ देखतै उछाह बाढल,
गह गह बजले निसान रे गियनियाँ।

बढ़ले नगरिया के लोग अगवानी हित,
जय जय गूँजै असमान रे गियनियाँ।
सुदर सुघर मनमोहनी मुरतिया कै,
करै सब अँखियन से पान रे गियनियाँ।
फूल बरसाइ कते आरती उतारैं केते,
चरन पखारैं धरि ध्यान रे गियनियाँ।

भगवन के चरनन की धुरिया लूटत केते,
प्रेमवाँ कै होय न बखान रे गियनियाँ।
भगवन के रँगवा मे सबही रँगाइ गइलै,
होइ गइलै सुख कै बिहान रे गियनियाँ।

यहि विधि प्रभु मिलि जुलि पुर लोगवन से,
करि राज बगिया में थान रे गियनियाँ।
भिखिया माँगन लागे हरिजन टोलवाँ मे,
सुनि नृप गए अकुलाय रे गियनियाँ।

हथवा मे लेहले लकुटिया काँपत चले,
राहुल चले थलिया सजाय रे गियनियाँ।
देखतै विरागी रूप अपने ललनवाँ कै,
नृपति गिरलै भहराय रे गियनियाँ।

करुणा में पगि प्रभु बढि के उठवलै से,
नृपति कै अग थहराय रे गियनियाँ।
विमल स्वरूपवा कै दरसन दिखाइ प्रभु,
ममता के देहलै मिटाय रे गियनियाँ।

बोललै "उठहु नृप आलस भगाइ,—
सत धरम के लेहु अपनाइ रे गियनियाँ"।

लोक परलोक दोनो आपन बनाइ लेहु
तृषना के देहु अब भगाय रे गियनियाँ।"

प्रभु कै बचन सुनि नृपति जुड़इलें से,
देखैं छवि अँखिया गड़ाय रे गियनियाँ।
भगवन के हथवा से भिखिया कै बरतन,
प्रेम छकि लेहलैं छुड़ाय रे गियनियाँ।

भिक्षुन सहित प्रभु महल ले गइले से,
भोजन करवलैं हरषाय रे गियनियाँ।
भोजन के बाद प्रभु साधुन सहित, शुभ—
आसन पर गइलें विराज रे गियनियाँ।

राजसी पोशाक, ठाट बाट जहाँ प्रभु साजे,
वहिजे विरागी रूप आज रे गियनियाँ।
राज परिवार सब घेरि के बइठलें से,
पर न यशोधरा लखात रे गियनियाँ।

सोचैं देवी "कुछ गुन हमरे मे होइहैं त,
खुद प्रभु लीहैं कुशलात" रे गियनियाँ।
अनुपम जोतिया जगल प्रभु अंग अंग,
लखि लखि सबही सिहात रे गियनियाँ।

सुनि सुनि ज्ञनवाँ की बतिया अमृत सम,
विह्वल मन न अघात रे गियनियाँ।
परम सुखद शान्ति छवली महलिया मे,
प्रेम नाही हृदय समात रे गियनियाँ।

अब प्रभु 'सारिपुत्र' 'मोग्गलायन' संग लेइ,
बढलै यशोधरा की ओर रे गियनियाँ।

रानी की महलिया मे जब पग रखलै से,
राहुल मचवलै एक शोर रे गियनियाँ।

"जगमग जोतिया महल मोरे अइली से,"
देवी झुकि देखली अँजोर रे गियनियाँ।

जोगिनी के भेषवा मे प्रभु ओर बढली से,
गिरली चरन छुइ कोर रे गियनियाँ।

तेजवा की अगिनी छुटत प्रभु तनवाँ से,
ठाढि भइली दोनो कर जोर रे गियनियाँ।

चन्द्र मुख चन्द्रिका कै पनवाँ करन लगली,
होइ गइली आनद विभोर रे गियनियाँ।

भगवन अमरित कै कइलै बरखवा से,
होइ गइली रानी सराबोर रे गियनियाँ।

सतधर्म हिरदय मे घर कइगइले से,
मिटि गइली माया घनघोर रे गियनियाँ।

चेलन सहित प्रभु उहवाँ से चलि भइलै,
*'न्यग्रोध आराम' कइलै थान रे गियनियाँ।

भगवन कै भाई नन्द राजभार लेवे चलले,
उत्सव भइलै महान रे गियनियाँ।

भोजन करन हित नृपति नेवतलै से,
अइलै भवन भगवान रे गियनियाँ।

साधुन समेत करि भोजन चलन लागे,
नन्द मन उठलैं तुफान रे गियनियाँ।

---

* राज्य बाग का नाम था।

राजभार उनके पहार सम लगले से,
मूड आपन लेहले मुडाय रे गियनियाँ।
भगवन के सघवा मे धाइ के समाइ गइले,
गइले नृपति घबराय रे गियनियाँ।

एक दिन नृप फिर प्रभु के नेवतले से,
कइले भोजन हरखाय रे गियनियाँ।
चलही की बिरियाँ यशोधरा सकेतवा से,
राहुल सग देहली लगाय रे गियनियाँ।

"तोहरेहि सघवा मे हमहूँ रहब अब",
ललन कहेलें ललचाय रे गियनियाँ।
प्रभु हँसि उनहूँ कै मुडवा मुडवले से,
साधु रूप देहलें बनाय रे गियनियाँ।

निरखि विरागी रूप नतियौ कै निरपति,
बचन कहैलें बिलखाय रे गियनियाँ।
"अँखियन कै तारा मोरे बूढ़े कै सहारा,
हाय हाय! राहुलौ गयल बिलगाय रे गियनियाँ।

शाक्य वश रजवा कै अत होइ गइले से,
मोरे पीछे कोई न देखाय" रे गियनियाँ।"

दोहा

कपिल वस्तु कुछ काल रहि, नृप का मोह मिटाय।
साधुन सहित अनूपिया बाग वसे प्रभु आय॥

किमिल, भद्र, अनुरुद्ध, भगु, देव दत्त, आनन्द।
शाक्यवंश को तजि सभा, भे दिक्षित स्वच्छ द ॥

इनके सग मे एक था, नाद चतुर सुजान।
राजकुमारो से प्रथम तेहि भटेउ भगवान ॥

वैशाली मे उन दिनो, सूखा पटा कराल।
प्रजा तडपता भूख से, विकल भए भूपाल ॥

करि आग्रह भगवान को, बुल्वायो महराज।
प्रभु पग धरते जल पडा, बरसि पड़ा सुरराज ॥

शुद्धोदन महरान इत, पडे कठिन बामार।
खबर पाइ प्रभु पुनि गए, नगर दूसरी बार ॥

मृत शय्या पर नृपति ने, प्रभु का दर्शन पाय।
जिस सुख का अनुभव किया, कवि से कहा न जाय ॥

पितु की सेवा तीन दिन, करि पायो भगवान।
नृपति अमर पुर को गये, लगी नारि बिलखान ॥

मृतक क्रिया निज हाथ करि, दै रानिन को ज्ञान।
वैशाली को पुनि कियो, प्रभु ने तुरत पयान ॥

प्रभु के वशज पुरुष तो, पहिलॅहि गए मुडाय।
बची कई सौ रानियॉ, गईं यही पर आय ॥

रानिन को करि भिक्षुणी, प्रभु दीन्हेउ उपदेश।
अखिल विश्व को, शाक्य कुल दिया शाति सदेश ॥

वैशाली से वेणुवन, आ प्रभु की हेउ वास।
बिम्बसार नृप ने दिया, सुख के सभी सुपास ॥

महरानी क्षेमा रहीं, नृप की प्रीयतम नारि ॥
प्रभु से मिलि भिक्षुणि बनी, माया सभी विसारि ।

पुनि श्रावस्ती को गए, दया सिन्धु भगवान ॥
श्री अनाथ पिण्डक वहाँ, धय हुआ पा ज्ञान ।

अनुपम पावन जेतवन, नामक रम्य यिहार ॥
श्री अनाथ पिण्डक दियौ, प्रभुहि करा जेवनार ।

ओनइस वर्षा वास प्रभु की हेउ यही निहार ॥
अद्भुत शक्ति दिखाइ यहि कियो चकित ससार ।

बिरहा

(अद्‌भुत शक्ति प्रदर्शन)

गौतम बुद्ध कइलै अचरज महनवाँ, बयनवाँ न होय सजनी। टेक।

आवस्ती मे अमृत लूटे नित लाखो नर नारी,
तिर्थंकर सब मन मे कुढै देहि करोडन गारी—
महिमा चाहे ढोंगी, छलिया, बेइमनवाँ,—
बयनवाँ न होय सजनी। गौतम०।

हिलमिल सब षड्यन्त्र रचे चिचा को किए तयार,
पगली गर्भ बना के पहुँची जहा रहे सरकार—
पापिनि रुपया पर बेचि देहलस ईमनवाँ—
बयनवाँ न होय सजनी। गौतम०।

भरी सभा मे साँपिनि आके छोड दई फुफकार,
"गौतम गर्भ रह गया मोरे, तुही मेरे भरतार"—
दुखवा पवलै सुनि सुनि सबही सयनवाँ—
बयनवाँ न होय सजनी। गौतम०।

शान्ति मूर्त्ति, मन मोहन के मुख पर खेलै मुसुकान,
बोले "बड़ा पाप दुनिया मे, कोई नहि झूठ समान,—
चिचा काहे झूठै छोड़ै ल् धरमवाँ—
बयनवाँ न होय सजनी।" गौतम०।

इतने ही मे लकड़ी का वह पेट गिरा महराय,
तिर्थकर सब लज्जित भइलै उठी सभा हरषाय।
चिचा रोवै आपन गनी गुनि करमवाँ—
बयनवाँ न होय सजनी। गौतम०।

एक बार प्रभु बोले "देबै आम के नीचे शिक्षा,"
कटे पेड़ श्रावस्ती के सब, उनकी हुई परीक्षा—
अमवा एकहू न छोड़लै दुसमनवाँ—
बयनवाँ न होय सजनी। गौतम०।

मिला आम एक पका झाल मे भगवन लेकर खाए,
गुठली तुरत भूमि गड़वा के जल ऊपर छिड़काए—
उगलै पेड़वा घेरैलँ असमनवाँ—
बयनवाँ न होय सजनी। गौतम०।

पके आम तहँ टपकन लागे, भिक्षुन सग प्रभु खाए,
तीर्थंकर लज्जित हो ऊँगली दाँतो तले दबाए—
चेहरा पीयर भइलै मन मोहन सम्हनवाँ—
बयनवाँ न होय सजनी। गौतम०।

उसी समय रुख पाय इन्द्र ने कीन्ही बड़ी तयारी,
आसमान मे रत्ना का एक बना चउतरा भारी—
जोतिया जगमग फइलल सगरा भुवनवाँ—
बयनवाँ न होय सजनी। गौतम०।

उसी चउतरे पर छत्तिस जोजन मे सभाविराजी,
सिहासन पर प्रभु जा बैठे खूब बधइया बाजी—
जय जय गूँजै लागल सारा असमनवाँ—
बयनवाँ न होय सजनी। गौतम०।

प्रभु के दाएँ अग का हर रोवाँ, अगार गिरावै,
बाएँ अग का हर रोवाँ बेहद जल धार बहावै—
भगवन धइले रहलै अद्भुत एक धीयनवाँ—
बयनवाँ न होय सजनी। गौतम०।

चका चौंध हो गए लोग जोगेश्वर लीला कइले
तीर्थंकर सब लज्जित हो हो अपने मुँह की खइलैं—
जनता करै लागल अनुपम दरशनवाँ—
बयनवाँ न होय सजनी। गौतम०।

परम विलक्षण मनमोहन अब रूप विराट बनाये,
जोजन अडसठ लाख तीन ही पगमे पार सिधाये—
आये देवलोक मे देवतन के करनवाँ—
बयनवाँ न होय सजनी। गौतम०।

अमृतमय उपदेश देवगण को प्रभु वहाँ सुनाये,
माता माया से मिलकर उनकी भी प्यास बुझाये—
जनता दरशन बीना सहै इत वेदनवाँ—
बयनवाँ न होय सजनी। गौतम०।

सारिपुत्र मोग्लायन जाके प्रभु से विनय सुनाये,
तीन माँस त्रयत्रिंश लोक रहि मनुज लोक प्रभु आये,—
बाबा कइलें भारी भक्तन कै कल्यनवाँ—
बयनवाँ न होय सजनी। गौतम०।

दोहा

आश्विन शुक्ला सप्तिमी, सकाशय* शुभ ग्राम।
देव लोक से उतरि प्रभु, दी हेउ दरस ललाम ॥

पुनि श्रावस्ती गमन करि, हरि भक्तन की प्यास।
शिशुमार गिरि पर कियो, अब की वर्षा वास ॥

प्रभु ने उदयन के नगर, कौशाम्बी मे आय।
मागधा की चाल भी विफल किया हरषाय ॥

निजन वन मे मगध के, मौन रस्यो भगवान।
गज बन्दर सेवै चरन, लै फल फूल महान ॥

श्रावस्ता पुनि आइ प्रभु, बक ब्रह्महि दे ज्ञान।
गर्मी भर रहि राज गृह, माडक पुर नियरान ॥

भारद्वाज एक विप्र था, कृषि कारज मे लीन।
महाभिक्षु सो या कह्यो, "खेती करहु प्रवीन ॥"

कृषक बचन सुनि हँसि प्रभो, बोलेउ बचन प्रमाण।
"मैं ऐसा खेती करहुँ, जेहि का फल निर्वाण ॥"

इसी भाँति प्रभु भ्रमण करि, करहिं धरम परचार।
देवदत्त उत द्रोह करि, गया सभी विधि हार ॥

श्रावस्ती कुछ काल, पुनि किन्हेउ प्रभु ने वास।
विविध भाँति उपदेश दे, अमर कियो इतिहास ॥

यहीं विशाखा देवि का, पाकर सात्विक दान।
पूर्वा राम बिहार भी पावन किय भगवान ॥

---

* फरूखाबाद जिले मे एक ग्राम था।

किटकिटा के तब बोला "झुट्ठे, ओ ठहर ठहर ठगहारे,,
हँसकर करुणानिधि बोल उठे, "मै तो हूँ ठहरा प्यारे ?-
चलते तुही तेज ओ चलता कुल जहनवाँ,,
वयनवाँ न होय सजनी ॥ गौतम० ॥

गूढ बचन सुनि अब ब्राह्मण के खुले ज्ञान के नैन,
चरण कमल पर गिरा प्रभो के होकर विकल बेचैन—
भगवन बना के चेला कै दिहलै कल्यनवाँ,
बयनवाँ न होय सजनी ॥ गौतम० ॥

कृशा गौतमी मृतक पुत्र ले श्रीचरणो मे आई।
"मेरा लाल जिला दो बाबा" देने लगी दोहाई—
अँसुवा बहै तरातर दुखिया के नयनवाँ,
वयनवाँ न होय सजनी ॥ गौतम० ॥

करुणाकर ने कहा "जिला दूँगा मै लाल सयानी,
बिना मरे घर की एक मूठी सरसो ला दो आनी"—
वतिया सुनत गौतमी कै देहलस पयनवाँ,
बयनवाँ न होय सजनी ॥ गौतम० ॥

घर घर मे जाकर पगली अपनी फरियाद सुनावै
पर बिना मरे घर की सरसो पचो ना कतहूँ पावे—
भइलै ज्ञान हृदय मे मिट गइली बेदनवाँ,
बयनवाँ न होय सजनी ॥ गौतम० ॥

मृतक पुत्र की दाह क्रिया करि प्रभु आगे अब आई,
जोगेश्वर सरसोइया माँगै, कृशा कहै हरषाई—

"बाबा सभी एक दिन सोइहै तानि कफनवाँ"
बयनवाँ न होय सजनी ॥ गौतम० ॥

हो गया ज्ञान गौतमी को, यों भिक्षुणी संघ में आई,
भव सागर में डूब रही, इस भाँति गई उतिराई—
लाखों भूले भटके पावैं यों ठिकनवाँ,
बयनवाँ न होय सजनी ॥ गौतम०



[गृहस्थ धर्म का उपदेश]

एक दिना भिक्षा हित भोरहि, पचो चलेउ बुद्ध भगवान,
कृपा कनखियन इत उत हेरत, राज गृह गवनेउ नगिचान।

भीगे केश वसन लॅह देखेउ, गृह पति सुत सिगल जेहि नाम,
हाथ जोरि सिर झुका झुका कर, छओ दिशन कॅह करत प्रनाम

अधम उधारन कारन पूछयो, लै मुख पर मधुरी मुसुकान,
ललकि ललकि अनुपम छविलटत, कहेउ सो चरन कमल धरि ध्यान।

'मरती बार पिता ने मुझको, इसका दिया यही बस ज्ञान,
कारन मैं कुछ भी नहि जानू, पितु आयसु पुरवउँ भगवान।"

सत्य वचन सुनि भगवन बोलेउ, "सुनु गृहस्थ के धरम सुजान
जिस पर चलहि चतुर नर नारी, मेटहि दुख पावहि कल्यान।

आर्यधर्म के जो पडित हो, चारहु क्लेशन देहि भगाय
किसी जीव को कष्ट न दैवै, चोरी कबहुँ करै नहि जाय।

झूठ बचन कबहूँ नहि बोल, पर तिरिया जाने जस माय,
राग, द्वेष, भय, मोह पाप के, चारहु कारण देय मिटाय।

धन का नाश नयन नहि देखै, छओ कारणो पर दे ध्यान,
बनि कुबेर सम धनिका जग मे, विविध भाँति पावँइ सनमान।

मदिरा आदि नशा नहि पीव, करै न चौ रस्ता की सैर,
नाच तमाशा कबहुँ न देखे, जुवा के थल राखे नहि पैर।

दुष्ट जनन की सगत छोडे, आलस से राखे नित बैर,
रहते कुशल सहित बनि धनिका, सदा मनावै सबकी खैर।

धन मेटन के ये छ कारन,
सबक छ छ दोष महान,
मदिरा आदि नशा पीने से,
मिटता धन का नाम निशान।

बढता कलह रोग पछियावै,
जग मे होय नाम बदनाम,
वेह्या सा स्वभाव बन जावै,
बुद्धि न दे अवसर पर काम।

सेर सपाटा के करने से,
प्रथम अरक्षित रहते आप,
स्त्री पुत्र अरक्षित होते,
धन दौलत पर लागै ताप।

पापी होने की शङ्का हो,
लगे कलक न जाय छोडाय,
बुद्धि भ्रष्ट हो जाती सारी,
मन मोडेहु नारि मोडाय।

नाच तमाशा की आदत से, चिन्ता बढ़ै, समय बेकार,
देह दिनो दिन दूबर होवै, उपजै चित मे विषय विकार।

पड़ि कुसग मे भ्रष्ट होन की, शका बनी रहै दिन रात,
महा आलसी बन बइठै नर, मन कुकर्म से नाहि अघात।

जीत से बैर, हार से चिन्ता,
जुआ आदि खेला मे होय,
धन बिनु चोरी करै जुआरी,
जग बिश्वास करै नहि कोय।

इष्ट मित्र अपमान करैं नित,
धूर्त जानि पूछै नहि बात,
ब्याह आदि उसका नहिं होवै,
करै कुकर्म मूढ दिन रात।

पापी और कुमित्र जगत मे छ प्रकार के सुनहु सयान,
धूर्त जुआरी नशेबाज, वचक कृतघ्न ये पॉच प्रधान।

छठवे गुण्डे चोर लुटेरे, खूनी आदि पाप के रूप,
इनकी सगति विपति बुलावै, अनायास डालै भव कूप।

अधम आलसी छ बातो से,
कर्म हीन रहते दिन रात,
कभी बहुत सर्दी को बोलै,
कभी करै गर्मी की बात।

कभी कहै "हो गई रात अब",
कभी कहै "अबही भिनुसार",
कभी कहै "अबही मैं भूखा",
कभी "पेट भारी है यार।"

इसी भाँति खल जीव चुराके,
अर्जित धन का करते नाश,
दुर्लभ धन के प्राप्त करन की,
सपनौ इनसे रहै न आस।

पर तिय गमन, अधिक सोना, औ, लडना, जुआ, दुष्ट का संग,
नाच गान रत, दिन का सोना, अशुभ कार्य करना प्रति अंग।

असमय इधर उधर का चक्कर, मदिरा आदि नशा का पान,
सेवा भाव हृदय नहिं रखना, बडा की आज्ञा कै अपमान।

कँजूसी से धन को रखना, नही कभी कुछ करना दान,
गृहपति पुत्र दोष ये चौदह, दूर रहैं गृहस्थ सयान।

जो औरो का धन हरता हो,
कोरी बात बघारे जोय
चिकनी चुपडी बाते करता,
धन नाशक जो मंत्री होय।

इन चारा को संग न राखै,
मित्र रूप ये शत्रु महान,
इनकी संगत से दुःख उपजै,
मिटता सुख का नाम निशान।

पर उपकार सदा जो करते,
दु ख सुख मे जो रहै समान,
धन की प्राप्ति वृद्धि के हित जो,
नाना विधि देवै नित ज्ञान

दयावान जो अतिसय होवै,
ये चारो है मित्र महान,
हठ करि इनकी सगत करते,
जो गृहस्थ है परम सयान।

आर्य धर्म की छआ दिशाएँ, सुन लो चतुर लगा के ध्यान,
मातु पिता हैं पूर्व दिशाएँ, भार्या स्त्री पश्चिम जान।

दक्षिण दिशा गुरू आचारज, उत्तर मित्र हितैषी मान,
सेवक नौकर अधो दिशा हैं, ऊर्ध्व श्रवण औ सन्त सुजान।

सभी दिशाएँ पाँच पाँच विधि, करहि अनुग्रह सुखद महान,
पाँच पाँच विधि उनकी सेवा, इसी लिए करते गुणवान।

पूर्व दिशा जो मातु पिता है,
पापों से राखैं नित दूर,
विद्याएँ बहु भाँति सिखावैं,
विविध ज्ञान देव भरपूर।

शुभ कर्मों म सुतहिं लगावें,
ब्याहै देखि सुघर वर नारि,
अन्त समय सब सम्पति सौंपै,
"लालहि लगै न विपति बयार।"

योग्य पुत्र इस कारण उनकी, सेवा सोचै पाँच प्रकार,—
पालन पोषण किया उन्होंने, हमहूँ करब हृदय से प्यार।

सारे काम किये वे मेरे, उनके हित हम रहब तयार,
उन्होंने जनमा कर यदि मुझको, कायम किया सुघर परिवार।

वैसइ योग्य पुत्र पैदा करि, कुल कै हमहुँ करब उपकार,
वे सम्पति ज्या हमहि समर्प, सुत हित हमहुँ देब उपहार।

विविध भाँति वे ज्ञान दिये मोहि, सद्‌गति हित उनके दे दान,
श्रद्धा सहित श्राद्ध हम करबै, देव तुल्य देबै सनमान।"

मातु पिता की सेवा का फल, जो मिलता नहि जाय बखान,
पूरब दिशा सुरक्षित होती, मिटता भय का नाम निशान।

दक्षिण दिशा रूप गुरु जन हैं,
किरपा करते पाँच प्रकार,
सुन्दर विनय भाव सिखलावै,
जिससे विजय होत ससार।

तरह तरह के शास्त्र पढावैं,
विद्या कला देहि सिखलाय,
सभी दिशा मे रक्षा करते,
हित मित्रो से देहिं मिलाय।

पाँच तरह से इनकी सेवा, करते चेला चतुर प्रवीन,
तत्परता, आज्ञा पालन से, सेवा में नित हो लवलीन।

सुस्थिर मन उपदेश श्रवण करि, विद्या हित करि श्रम का दान,
दक्षिण दिशा सुरक्षित करते, मिटता भय का नाम निशान।

पश्चिम दिशा रूप तिय भार्या,
पाँच तरह करती कल्यान,
गृह के काम करहि उत्तम विधि,
देवै भक्ति प्रेम कै दान।

घर वालो को वश करि राखै,
नौकर तक का करती प्यार,
विपति काल मे कष्ट उठाके,
धन रक्षा हित रहै तयार।

पति हित सब कामो का करतीं,
तन मन धन देती वलिहार,
शक्ति बनी प्रिय पति की रहती,
विविध भाँति करतीं उपकार।

इनकी सेवा पाँच तरह से, करते जो हैं पुरुष सयान,
धन सम्पति सब उन्हें सौंपते, करें हृदय से नित सनमान।

परतिय गमन कभी नहि करते, नहि करते उनका अपमान,
भूषण बसन प्रेम से देवें, सुख से उनका होय विहान।

पश्चिम दिशा सुरक्षित होती, मिटता भय का नाम निशान,
सुख सम्पति उनके घर बरसे, बुध जन उनका करहि बखान।

मित्र हितैषी पाँच तरह से,
करते कृपा सुनहु मति धीर

विपति काल मे सग न छोडे,
यथा सक्ति मेटे सब पीर।

भीर पडे पर धन सम्पति की,
रक्षा करै लगा के ध्यान,
भूल सुधारे हर औसर पर,
भय मे देवै सरन सुजान।

पुत्र पौत्र आदिक वशज की,
रक्षा भी करते सब काल,
पॉच तरह से इनकी सेवा,
भी होती, सुनु चतुर सिगाल।

समय पडे पर तन मन धन से, बने सहायक उनका जाय,
सुख दुख मे उनका साथी बनि, बोलै बचन प्रेम छलकाय।

समय समय पर दान उन्हे दे, और करे विश्वास प्रदान,
उत्तर दिशा सुरक्षित होती, मिटता भय का नाम निशान।

अधा दिशा रूपी सेवक,
परि चारक सेवै पॉच प्रकार,
मालिक से पहिले उठते है,
कामा मे रहते तइयार।

मालिक के सोने पर सोते,
यश कीरति के करे प्रचार,
दिया हुआ मालिक का लेवै,
कभी नही करते इनकार।

इसी लिए इनकी सेवा भी, करते ज्ञानी पाँच प्रकार,
ठीक समय पर वेतन देवै, काम देय शक्ती अनुसार।

समय समय पर छुट्टी देवें, दवा करे जब होय बीमार,
तनिकौ घृण करै नहि उनसे, पुत्र सरीखा करहि दुलार।

तरह तरह का भोजन देव, स्वाद सने सुन्दर पकवान,
अधो दिशा या सुखमय होती, मिटता भय का नाम निशान।

उर्ध्व दिशा रूपी साधू औ,
श्रवण महतमा करि कल्यान,
शुभ कर्मो मे हमहि लगावें,
फेरें पाप करम से ध्यान।

नित पावन उपदेश सुनावै,
पूरा कर अधूरा ज्ञान,
स्वर्ग मोक्ष के मार्ग बतावै,
रक्षा करहि न जाय बखान।

इसी लिए इनकी सेवा भी, सुनु सिगाल हो पाँच प्रकार,
इनके स्वागत हित नित राखै, अपने घर का खुला दुवार।

मैत्री भाव युक्त नित करते, शारीरिक सेवा शुभ मान,
इसी भाव से मानसिक वाचिक, सेवा भी करते भल जान।

भोजन और वस्त्र आदिक का, समय समय पर देते दान,
उर्ध्व दिशा मगलमय होती, मिटता दुख का नाम निशान।

जो कुलीन गिरहस्थ इसी विधि,
छओ दिशा कँह करहिं प्रणाम,

लोक और परलोक विजय करि,
फैलावै यश कीति महान।

जो कुलीन गिरहस्थ उद्यमी,
निरालसी, दानी, मति धीर,
मेधावी, सग्रह कर्त्ता हो,
नेता हो प्रिय वक्ता वीर।

ईष्या रहित, कृतज्ञ, विनेता,
और मित्रता करता होय,
अन्त समय सो सद्‌गति पावै,
शत्रु न उसका जग मे कोय।"

गृह पति-पुत्र सिगाल श्रमण करि,
अमृतमय अनुपम शुभ ज्ञान,
होइ आनन्द विभोर जोर कर,
कहा "बुद्धसरण गच्छामि।"

रोमाञ्चित तन गद्‌गद हो कर,
कहा "धर्मशरण गच्छामि",
चरण कमल पर लगा पलोटन,
कहा "सघशरण गच्छामि।"

लखि सिगाल की अनुपम श्रद्धा,
भक्ति-भाव प्रियतम पहिचान
शरणापन्न उपासक उसको,
बना लिये कोमल भगवान।

२३

शूद्र कौन है ?

[भारद्वाज को शिक्षा]

एक दिना भिक्षा हित पधो, श्रावस्ती अइलै भगवान,
भरद्वाज नामक ब्राह्मण तहँ, करता हवन लगा के ध्यान।

प्रभु को आता देखि क्रुद्ध हो, मूरख बचन कहै ललकार,
"हे मुण्डी, हे शूद्र, श्रमण, इत, आने का न तुझे अधिकार।

वहीं खड़ा रह ! वहीं खड़ा रह ! इधर न अब रखना तू पैर,
पाखण्डी यह रूप लिए हट, दूर जो चाहै अपनी खैर।"

मनमोहन मुसकाकर बोले, "शूद्र किसे कहते द्विजराज !
शूद्रों का करतब कुछ कहिए, या सुनिए हमसे सब आज।"

कोमल बचन सुनत भगवन कै, ब्राह्मण उर आई बड़ि लाज,
बोला "तुम्हीं बता दो भगवन, शूद्र कौन क्या करता काज।"

करुणाकर ने कहा "सुनो तुम, हमसे ही फिर देकर ध्यान,
जो जीवों की हिंसा करता, है निरदय वह शूद्र महान।

गाँव नगर की राह जो रूँधै, हरै पराया धन जो धाय,
चोरी ठगहारी छल बल से, बिन पूछे कुछ लेय उठाय।

कर्जा लेकर भाग जाय या, माँगे पर जावै इनकार,
धन हित झूठी करे गवाही, वह शूद्रो का है सरदार।

अपनी जाति कुटुम्ब मित्र की, तिरिया की जो हरता लाज,
ऐसे महा अधम को मानो, शूद्रो का सचमुच सिरताज

पूजनीय पितु, मातु, वृद्ध, आदिक का पालन करै न जोय,
उलटै इन पर हाथ उठावै, या अपमानित करता होय।

पूछे भली सलाह कोई जब, बुरी राय जो दे हरषाय,
सत्य बात जो सदा छिपावै, असली शूद्र वही कहलाय।

पाप कर्म करि परदा डालै, मेहमानी नित जाकर खाय,
अपने घर जब पहुँना आवै, बैठै भीतर बदन छिपाय।

साधु सन्त को धोखा देवै, कडई बात कहै रिसियाय,
अपने मुँह आपन गुन गावै, पर निन्दा मे नही अघाय,

जो क्रोधी निर्लज्ज लालची, कपटी, पापी दुर्जन और,—
नित जीवो को दुख देता हो, वह शूद्रो का है सिर मौर।

जो सर्वज्ञ पुरुष या उसके, चेलन का करता अपमान,
झूठ मूठ अपने को छलिया, कहता हो जग मे परधान।

ब्रह्म-ज्ञान का शून्य बनै, ब्राह्मण बातो से जो नादान,
मृत्यु लोक से ब्रह्म लोक तक, मिलै न वैसा शूद्र महान।

※कर्म प्रधान सत्य जग परगट, भरद्वाज सुन लो दे ध्यान,
खेत मे जोइ जोइ बीज बिखेरै, सोइ सोइ आखिर लुनत किसान

※ बौद्ध लोग आत्मा को नश्वर मानते हैं। कर्मवाद को विलक्षण ढग से

ऋषि मातग डोम घर जनमे, करतब से मुनिभये महान,
देव लोक में पूजित होकर, ब्रह्म लोक पाए शुभ धाम।

पावन मनभावन मगलमय, भरद्वाज पाकर शुभ ज्ञान,
प्रभु के चरण कमल पर झुककर, माँगेउ तुरत क्षमा कै दान।

शरणापन्न देखकर भगवन, पल मे भय सब दीन्ह भगाय,
शिष्य बनाकर भारद्वाज को, पुनि विहार मे विहरेउ आय।



उन्होने अपने मत के अनुकूल किया है। प्राणी की मृत्यु होने पर उसके सब खण्ड—आकार आदि सब—नष्ट हो जाते है। केवल कर्म शेष रह जाते है जिससे फिर नये नये खण्डो की योजना होती है और एक नया प्राणी उत्पन्न होता है। पिछले प्राणी के साथ, इस नये प्राणी का कर्म सूत्र सम्बन्ध रहता है। इससे दोनो को एक ही प्राणी कह सकते है।

२४



ब्राह्मण कौन है ?

[धनि राधेश्याम रामायण,]

जब एक समय भगवान विराजित, इच्छा नगल वन मे थे,
आ गए युवक दो वही प्रश्न एक, लिए पडे उलझन मे थे।

ये दोनो वेद पढइया थे, औ ब्राह्मण थे विज्ञानी थे,
'वाशिष्ठ' और था 'भारद्वाज', शुभ नाम वडे सरनामी थे।

जब भारद्वाज कहता था "ब्राह्मण, जन्म से जग मे आता है",
वाशिष्ठ कहे "शुभ कर्मो से, मानव ब्राह्मण पद पाता है।"

रख गई समस्या जब आगे, भगवन बोले मुसुका करके,
मानता हूँ जिसको मै ब्राह्मण, सुन लो तुम ध्यान लगा करके।

"जातियाँ जगत में जितनी है,
है जाति चिन्ह भी अलग अलग,

तृन पात, लता, फल फूल वृक्ष,
आदिक में देखो विलग-विलग।

लघु कीट पतग चीटियो में तुम,
जाति चिन्ह विलगा लोगे,
जल चर, नभ चर, चौपायो में
भी, उसका पता लगा लोगे।

देखोगे सारे जीवों मे
वह जाति चिन्ह बिलगाती है,
पर मानव जाति विभिन्न जाति,
चिन्हो को कहाँ बताती है?

शिर, केश, कान, मुख, आँख, नाक,
पग, पीठ, पेट, छाती, रसना,
मानव शरीर का हर हिस्सा,
चाहे तुम ले लो जो जितना।

इनको लख कर ब्राह्मण, क्षत्रिय,
आदिक में भेद न पाओगे,
प्राकृतिक चिन्ह तुम जाति विभाजक,
बिन देखे पछताओगे।

बस नाम मात्र का कृतिम भेद,
मानव में प्रकट दिखाता है,
जो जो जैसा करतब करता,
चटपट वैसा बन जाता है।

देखो जो सेवा करता है,
वह सेवक नाम कमाता है,
चोरी करके जो खाता है,
वह चोर पुकारा जाता है।

कपड़ा धोकर धोबी बनते,
गहना गढ़ कर सोनार बने,
करतब करके सब विलग विलग,
बनियाँ, तेली, लोहार बने।

सचमुच है मानव जाति एक,
जीवन के साधन विलगाए,
जाना है सबको एक जगह,
है एक जगह से सब आए।

यह जाति पाति का भेद भाव,
मानव में व्यर्थ झमेला है,
इसके हित नाहक सब लड़ते,
दुनिया दो दिन का मेला है।

करतब की सारी लीला है,
करतब से शूद्र विप्र बनते,
कोई जन्म से क्षत्रिय या ब्राह्मण,
भू मण्डल पर पग ना धरते।

जिन जिन शुभ कर्मों के फल से,
मानव ब्राह्मण पद पाता है,
हे भारद्वाज वाशिष्ठ सुनो,
यह बुद्ध तुम्हे बतलाता है।

ससारी विषय वासना मे, जो मन को नही रमाता है,
हो जीवन-मुक्त यशस्वी जग मे, वह ब्राह्मण पद पाता है।

वसुधा के सारे बन्धन को, तन मन से जिसने तोडा है,
भय कम्पन हीन हृदय जिसका, छल छद्म को जिसने छोड़ा है।

जिसके मन मोह न वास करे, जो प्रेम-बैर का त्यागी है,
जिसने सब विघ्नो को मेटा, वह बुद्ध पुरुष बड भागी है।

❀ चौदह दोषो से दूर जो है, दुष्टो का जो अपमान सहै,
जो विपति काल मे धैर्य धरै उनको 'ब्राह्मण' विद्वान कहै।

जो क्रोध रहित, सीधा सादा हो, शान्ति मूर्त्ति धर्मात्मा हो,
प्रिय वादी हो, उपकारी हो, अरु क्षमा रूप परमात्मा हो।

जिसने केवल अन्तिम शरीर, जग मे आया कर धारण है,
वह जन्म मरण के चक्कर से, छूटेगा, सच्चा ब्राह्मण है।

जिस तरह सुई की नोके पर, सरसोइया नही ठहरती है,
रुचि काम बासना से जिसकी, वैसे ही सदा फिसलती है,

जो दुखो से बचने का उत्तम, औ सही मार्ग का ज्ञाता है,
पापिनि तृष्णा औ अहकार, ममता से तोडे नाता है,

जो सत्य व्रती, गम्भीर, कामना शून्य, वीर, ब्रह्मचारी है,
जो परम अहिसक, असग्रही, सर्वज्ञ, शान्त, व्रतधारी है,
जो योगी, इन्द्रिय जीत, सजमी, प्राप्त किए शुभ तप बल है,

❀ १ (अ) १४ दोष पृष्ठ सख्या ४० पर देखे १ (ब) त्रिविद्या १-पूर्व जाति स्मर विद्या २-दिव्य चक्षु ज्ञान विद्या ३-आसव क्षय विद्या।

जो सफल त्रिविद्या का ज्ञाता, तेजस्वी और विचक्षण है,
जो कर्म योग का पडित है, सचमुच उत्तम सो ब्राह्मण है,"

पा बिमल ज्ञान दोनों ब्राह्मण, चरणो पर माथा टेक दिए,
बन गए शिष्य मनमोहन के, आपस का झगडा मेट दिए।

[परब्रह्म के साथ एकता]

परब्रह्म के साथ एकता की,
लेकर शका फिर वे आए,
पुरुषोत्तम प्यारे शिष्यों का,
भ्रम दूर किए यों समझाए—

"हे भारद्वाज, वाशिष्ट सुनो,
ब्रह्मा धन पास नहिं रखते,
स्त्री भी उनके साथ नहीं,
खल का सहवास नहीं करते।

उनके मन हिंसा, काम, क्रोध,
अविशुद्धचित्तता ना टिकती,
जिनमे ये सारी बाते हो,
ब्रह्मा की उनसे ना पटती।

इसलिए भिक्षु जो मेरे हैं,
स्त्री, धन, आदिक छोड दिए,
परब्रह्म से मिलने के खातिर,
इन सबसे नाता तोड़ दिए।

पीकर ज्ञानामृत तृप्त हुए,
गद्गद् हो दोनो पुलकाए,
भ्रम के भँवरो से मुक्त हुए,
श्री चरणो में आश्रय पाए।

[चाण्डाल बालिका प्रकृति को दीक्षा]

आनन्द नाम के शिष्य एक, भगवन के परम पियारे थे,
रहते मनमोहन सग सदा, सेवा पर सब कुछ वारे थे।

जिस समय महा प्रभु श्रावस्ती, के, शुभ विहार मे विहर रहे,
भिक्षा हित आनन्द चले, श्रावस्ती की इक डगर धरे।

मारग मे उनको प्यास लगी, गर्मी जोरो की पडती थी,
एक कुँवा दिखाया पास वही, एक लडकी पानी भरती थी।

चाण्डाल जाति की वह बाला, था प्रकृति नाम, थी अति भोली,
आनन्द ने उससे जल माँगा, एक मर्म वाक्य वह यो बोली—

"चाण्डाल जाति की कन्या हूँ, कैसे जल आह! पिला दूँ मैं",
आनन्द बढ़ा जल पात्र कहे, "तुमसे जल केवल माँगू मैं।"

यह जाति पाँति तुमसे किसने, पूछा जो ऐसा कहती है,
यह छुआछूत का भेदभाव मूर्खों की दुनिया रखती है।

अब क्या था, प्रकृति निहाल हुई, उत्साह अलौकिक छलक पडा,
श्रद्धा विश्वास सहित उसने, धोकर अपना भर लिया घडा,

कुछ झिझक, सकुच, अरु भक्ति सहित चाण्डाल बालिकाने बढ़कर,
आनन्द को पानी पिला दिया, मिट्टी के बरतन मे भरकर।

इसका फल उसको तुरत मिला, चाण्डाल बालिका धन्य हुई।
प्रभु का दर्शन, उपदेश मिला, भिक्षुणी संघ मे मान्य हुई।

इस तरह सदा योगेश्वर ने लाखो का अति उपकार किया,
जाति पॉति का भेद भाव मेटा सबहीं का प्यार किया।

दोहा

पैंतालिस शुभ बरस लौं, ज्ञानामृत करि दान,
कोमल उर करुणा लिए, चलि पैदल भगवान।

श्रावस्ती से करि चल्यो, अंतिम वर्षा वास,
गृद्धकूट गिरि पर रह्यो, राज गृही के पास।

वर्ष कार को राष्ट्र के *सात धर्म बतलाय,
भिक्षु धर्म को भी यहीं, दी हेउ सीख बुलाय।

---

* राष्ट्र के सात धर्म—राष्ट्र के प्रत्येक गॉव मे निम्नलिखित धर्मो के बरतने से राष्ट्र का पतन नही होता।

१—गॉववालो का नियम पूर्वक आपस मे हिल मिलकर अपनी सभा करना।

२—उनका आपस मे मतभेद छोडकर मिल्कर प्रत्येक कार्य करना।

३—उनके अपने बनाए गए नियमो—सदाचार तथा सत्प्रथा का पालन करना।

४—उनका अपने यहॉ के आदर योग्य व्यक्तियो का सम्मान करना।

५—उनका कुल कुमारियो और कुल स्त्रियो को अपनी मॉ बहन के समान समझना।

६—उनका चैत्यो की वंदना करना, और अपने नगर की रक्षा करना।

७—उनका अपने यहॉ आए हुए अर्हंत पुरुषो धर्मोपदेशको की रक्षा तथा सेवा सत्कार आदि करना।



छन्द

(तर्ज राधेश्याम)

[भिक्षुसंघ को उपदेश]

उपस्थानशाला मे प्रभु ने, भिक्षुसघ बुलवाय लिया,
उनके हित उत्तम उपयोगी, चुन चुनकर अनुपम राय दिया।

बोले प्रभु "गप-शप, नींद, कर्म, आमोद से रहना दूर सभी,
पापेच्छा प्रबल न हो मन मे, दुर्जन सग रहना नही कभी।

निर्वाण प्राप्ति के लिए सजग, करते नित यत्न सभी रहना,
बस अध पतन होगा न कभी ये सात मन्त्र जपते रहना।

तुम श्रद्धा, लज्जा, विनय, वीर अरु प्रज्ञावान बने रहना,
शास्त्रज्ञ और हो स्मृतवान जग मे निर्भय विचरण करना।

तुम स्मृति, पुण्य अरु वीर्य प्रीति, प्रशान्ति समाधि उपेक्षा का,
चिन्तन करते रहना मन में भय रखना नही परीक्षा का।

आदीनव' अशुभ, अनित्य, अनात्म, वीराग' निरोध प्रहाणो का,
सतत सचेत भावना करना इन सातो सज्ञाओ का।

तुम शारीरिक, मानसिक, वाचनिक, मैत्री औ सद्भाव रखो,
प्राप्त हुई भिक्षा उत्तम भिक्षुओ मे बॉटो और चखो।

सत्धर्म की ओर दृष्टि अपनी, चौकन्ना हो रक्खे रहना,
छ महा मन्त्र ये भी मेरे प्रिय शिष्यो मन रक्खे रहना।

तुम प्रज्ञा, और समाधिशील इनका भी नित सेवन करना,
बस अध पतन होगा न कभी निर्भय आगे बढ़ते रहना।"

दोहा

इमि शिक्षा दै सघ को, नालन्दा प्रभु आय,
प्रिय शिष्यन को विविध विधि दीन्हेउ अनुपम राय।

पुनि आन दहि सग लै, पाटलि ग्रामहि जाय,
गिरहस्थो को विविध विधि उपदेशेउ हरषाय।

'वर्षकार' औ 'सुनिधि' थे, सचिव मगध के श्रेष्ठ,
प्रभु को आमत्रित किए, सेवा किए ययेष्ठ।

गगा पार अकाश से, पुनि की हेउ भगवान,
कोटि ग्राम मे सघ को, दीन्हेउ अनुपम ज्ञान।

इसी तरह प्रभु भ्रमण करि, वैशाली मे आय,
गनिका को धनि धनि कियो, उसके घर का खाय।

कजली मिर्जापुरी

[गनिका को उपदेश]

गौतम गनिका के घर अइलै, पचो सुना बयनवाँ ना ॥टेक॥

वैशाली मे अन्तिम वर्षा वास हृदय अनुमान,
आम्र पालिका गनिका की बगिया अइलै भगवान—
मनहर देखि अरमवाँ ना, प्रभुजी वास यहीं पर कइलै—
मनहर देखि अरमवाँ ना। गौतम ।

वेश्या ने सुनि भाग्य सराहा, रथ चढ़ि किया पयान,
कुछ दूरी पर उतर चली पैदल जहँ थे भगवान—
भइलैं सुफल नयनवाँ ना, सब कुछ दरशन से मिलि गइलै—
भइलै सुफल नयनवाँ ना। गौतम ।

प्रभु के चरण कमल में वेश्या बैठ गई सिर नाय,
जोगेश्वर उपदेश सुनवलै, जियरा गयल जुड़ाय—
भइलै विमल गियनवाँ ना, नैना हिरदय कै खुलि गइलै—
भइलै विमल गियनवाँ ना। गौतम ।

गद् गद् होकर गनिका बोली "हे प्रभु दीनानाथ,
सघ सहित कल्ह भोजन देके होवै हमहुँ सनाथ"—
चलली उमँगि भवनवाँ ना, भगवन अनुमोदन कइ देहलै—
चलली उमगि भवनवाँ ना। गौतम ।

बृज लोगो ने सुना कि बगिया मे, ठहरे भगवान,
रग विरगे वस्त्राभूषण पहिन पहिन सब ज्वान
रथ चढि किए पयनवाँ ना, रथवा वेश्या कै टकरइलै—
रथ चढ़ि किये पयनवाँ ना, गौतम ।

बृज लोग तुरत ही बोल उठे "क्यो दीन्ही रथ टकराय?
सच्ची बाते बता अभी क्या, तुमको नही दिखाय??
मन में भरा गुमनवाँ ना, भगवन बाग तेरे ठिक गइलै—
मन में भरा गुमनवाँ ना।" गौतम ।

गनिका कहे "काम हे भारी, नहि घमण्ड कुछ बाय,
प्रभु मोरे घर भोजन करिहै, सघ सहित कल्ह आय—
हँकली तेज विमनवाँ ना, एहि से रथ मे रथ लडि गइलै—
हँकली तेज विमनवाँ ना।" गौतम ।

बचन सुनत सब अचरज खाके, नेवता माँगै मोल,
लाखो मुद्रा देन कहै तब, गनिका उठली बोल—
"झखो लिए खजनवाँ ना, भगवन भक्तन कै धन भइलै—
झखो लिए खजनवाँ ना" गौतम ।

ऊँगली से निर्देश करै सब, बोलै बारम्बार,
"ठगे गए इस वेश्या से हम आज गए सब हार—
भइलै विकल परनवाँ ना, अवसर सोना अस चलि गइलै—
भइलै विकल परनवाँ ना।" गौतम ।

पश्चाताप करत सब मन मे, आए जहँ भगवान,
चरण कमल बन्दन करि बैठे प्रभु दीन्हेउ शुभ ज्ञान—
विनती करे जवनवाँ ना, उनकर नेवता नहीं सुहइलै—
बिनती करै जवनवाँ ना। गौतम ।

होतहि भोर भिक्षु सघ भगवन, भिक्षा पात्र उठाय,
आम्र पालिका गनिका के आँगन मे गइलै आय—
गनिका चुमै चरनवाँ ना, भगवन भोजन प्रेम से पवलै—
गनिका चुमै चरनवाँ ना। गौतम ।

खा पी कर भगवान विराजे, दिए विविध विधि ज्ञान,
आम्र बाटिका विनती करके, गनिका देहली दान—
भइलै सुफल जनमवाँ ना, दुखवा मन मोहन मेटवलै—
भइलै सुफल जनमवाँ ना। गौतम ।

गीत

[ध्वनि सारगा सदा बृज]

[पावा नगर की ओर]

गनिका के घर में खाके, भगवन पलटलै प्यारे,
बगिया में कईलै उनके थान जी।
शिष्यन के अपने चारो ओरियाँ बइठवलै प्यारे,
देहलै विविध विधि ज्ञान जी।
जीवन की अन्तिम बरसतिया बितावै चललै,
आनन्द संग लैके वेलूव ग्राम जी।
अस्सी बरसवा की, देहियाँ पुरानी प्यारे,
कइल चाहै अब आराम जी।
अँग-अँग प्रभु कै हड़तलवा मचावै लगलै,
पीड़ा बाढ़ल घनघोर जी।
प्रभु के दुखित देखि, आनन्द विकल भइलै,
छवली निराशा चहुँओर जी।
शिष्यन से मिलले बिना, त्यागब शरीरिया हो,
प्रभु के न उचित लखाय जी।

तीनि महीना अवरउ, अमृत बाँटन हित,
प्रभु देहलै दुखवा मिटाय जी।
आयू संस्कार त्याग, जेहि छिन कइलै भगवन,
मन्दिर चापल चैत्य आय जी।
तेहि छिन अइलै हाहाकारी, भूडोलवा प्यारे,
कड़कै बिजुलिया अरराय जी।
आनँद पूछन लगलै, कारन भूडोलवा कै,
भगवन देहलै बताय जी।
एक से एक बढ़कर[1] आठो करनवाँ प्यारे,
भगवन देहलै गिनाय जी।

१—भूकम्प के आठ कारन—भगवान ने कहा १-यह विशाल पृथ्वी जलके ऊपर प्रतिष्ठित है इसी प्रकार जल वायु मे और वायु आकाश में प्रतिष्ठित है। अत जब महावायु प्रवाहित होता है तब जल कम्पित होता है और जल कम्पित होने से पृथ्वी कम्पित होती है।

२—कभी कभी असाधारण मानसिक शक्ति सम्पन्न, संयतचित्त महा पुरुष, श्रवण अथवा देवता, अपनी गम्भीर चिन्ता द्वारा पृथ्वी को आन्दोलित कर देता है।

३—जब कोई बोधिसत्व तूषित देवलोक को त्याग कर स्मृतिवान् और सम्प्रज्ञात भाव से माता के उदर में आते हैं तब भी भूकम्प होता है।

४—वैसे ही बोधिसत्व जब पृथ्वी पर जन्म ग्रहण करते हैं तब महा भूकम्प आता है।

५—जब तथागत कोई अनुत्तर सम्यक् सम्बोधि लाभ करते हैं, तब भूकम्प आता है।

६—जब कोई तथागत धर्म चक्र प्रवर्तन करते हैं तब भूकम्प आता है।

७—जब कोई तथागत अपनी स्मृतिवान और सम्प्रज्ञात अवस्था में रहते हुए अपने निर्दिष्ट आयुकाल का त्याग करते हैं तब भूकम्प आता है।

[2]आठो समजवन की सेवा की चरचा भी,
भगवन देहलै चलाय जी।
मोह छोड़ाने वाली,[3] आठो उपइया सुन्दर,
आनन्द के देहलै समझाय जी।

८—जब कोइ तथागत निरुपाधि शेष परिनिर्वाण धातु को प्राप्त होते है तब भी महाभूकम्प आता है।"

२—आठो समाज—(जिनको भगवान बुद्ध ने शिक्षा दी) (१) क्षत्रिय समाज, (२) ब्राह्मण समाज, (३) गृहपति समाज, (४) श्रवण समाज, (५) चातुमहाराजिक देवता समाज, (६) त्रयत्रिंश देवता समाज, (७) मार समाज और (८) ब्रह्म समाज।

३—मोक्ष के आठो उपाय—भगवान ने कहा हे आनन्द विमुक्ति के आठ सोपान हैं—(१) मन में रूप (वस्तुओं) का भाव विद्यमान है। और बाहरी जगत में भी रूप (वस्तुएँ) दिखाई पड़ती है। ऐसी भावना करना।

(२) मन में रूप का भाव विद्यमान नहीं है। परन्तु बाहरी जगत मे रूप दिखाई पडता है। ऐसी भावना करना।

(३) मन में रूप का भाव विद्यमान है परन्तु बाहरी जगत में रूप दिखाई नहीं पडता। ऐसी भावना करना।

(४) रूप जगत् को अतिक्रमण करके 'आकाश अनन्त' इस प्रकार भावना करते करते 'आकाशानन्त्यायतन' में विहार करना।

(५) आकाशानन्त्यायतन से 'विज्ञान अनन्त' इस प्रकार भावना करते करते विज्ञानानन्त्यायतन में विहार करना।

(६) विज्ञानानन्त्यायतन को पार कर 'अकिंचन' अर्थात् 'कुछ नहीं' इस प्रकार भावना करते करते अकिंचन्यायतन मे विहार करना।

(७) अकिंचन्यायतन को पार कर 'ज्ञान भी नहीं है अज्ञान भी नहीं है', इस प्रकार भावना करते करते "नैवसज्ञानासज्ञायतन,, में विहार करना।

पवलै खबरिया महा, परिनिरवणवॉ की,
आनन्द गइलै घबडाय जी ।
एक कलप अवरऊ, भगवन के रहै खातिर,
करि के विनय गइलै हार जी।
भगवन विहँसि उनकर, मोहवा मिटवलै प्यारे,
कइलै हृदय से उनकर प्यार जी।
अब प्रभु आनन्द सग, आगे पयान कइलै,
अइलै महावन कूटागार जी ।
[४]तैतिस तत्व अनुपम, चेलवन से कहलै भगवन,
बुद्ध धरमवॉ कै सार जी ।

---

(८) नैवमज्ञाना सज्ञायतन का अतिक्रमण करके ज्ञान और ज्ञाता दोनो के निरोध द्वारा "सज्ञा वेदयित निरोध" उपलब्ध करना ।

४--तैतीस बोधि पक्षीय धर्म—स्मृत्युपस्थान, चार चार सम्यक प्रहाण, चार ऋद्धि पाद, पॉच इन्द्रियॉ पॉच बल, सात सम्बोध्यग, और आठ आर्याष्टागिक मार्ग ।

चार स्मृत्युपस्थान—(१) शरीर अपवित्र है, (२) वेदनाएँ (इन्द्रिय द्वारा वाह्य वस्तुओं का ग्रहण) सब दुखमय है । (३) चित्त चचल है । और (४) ससार की सब वस्तुएँ अलीक है । ऐसी भावनाएँ करना ।

चार सम्यक प्रहाण—(१) अनुत्पन्न पुण्य कर्मों का उत्पन्न करना, (२) उत्पन्न पुण्य कर्मों की वृद्धि और सरक्षण, (३) उत्पन्न हुए पाप कर्मों का नाश करना और (४) अनुत्पन्न पाप कर्मो को न उत्पन्न होने देना ।

चार ऋद्धिपाद—(१) असामान्य अलौकिक क्षमता प्राप्त करने की अभिलाषा और दृढ़ सकल्प । (२) असामान्य अलौकिक क्षमता प्राप्त करने का उद्योग, (३) असामान्य अलौकिक क्षमता प्राप्त करने का उत्साह, और (४) असामान्य अलौकिक क्षमता प्राप्त करने का अन्वेषण ।

पॉच बल—(१) श्रद्धा, (२) वीर्य, (३) स्मृति, (४) समाधि और (५) प्रज्ञा ।

इहवाँ से भडग्राम, सध समेत गइलै,
कोमल चित भगवान जी।
जन्म मरनवाँ कै, चक्कर छोडावन वाले,
शिष्यन के देहलै चारो ज्ञान जी।
अइसइ सिखावन देत, चेलवन सहित पचो,
चलि भइलै आगे सरकार जी।
पावा नगरिया के, पावन कइलै आके,
तरि गइलै चुन्द सोनार जी।
अन्तिम भोजन भगवन, चुन्द के घर में कइलै,
भक्त कै रखलै दुलार जी।
सूकर कै मान्स तक, प्रभु जी स्वीकार कइलै,
कइलै न तनिको इनकार जी।
जइसे सुजाता जी की, खाके मधुर खिरिया,
प्रभु मोरे पवलै अनुपम ज्ञान जी।
चुन्द कै श्रद्धा सनल, करिके भोजन वइसै,
पाइ गइलै परिनिरवान जी।

सात सम्बोध्यग—(१) स्मृति, (२) धर्म, (३) वीर्य, (४) प्रीति, (५) प्रशान्ति, (६) समाधि और (७) उपेक्षा।

आठ श्रेष्ठ मार्ग—(१) सम्यक् दृष्टि, (२) सम्यक् सकल्प, (३) सम्यक् वाचा, (४) सम्यक् कर्मान्त, (५) सम्यक् आजीव, (६) सम्यक् व्यायाम, (७) सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि।

५—विमुक्ति के चार धर्म—(१) श्रेष्ठ महत् चरित्र, (२) श्रेष्ठ गम्भीर ध्यान, (३) श्रेष्ठ तत्व ज्ञान और (४) वास्तविक स्वाधीन अवस्था।



भगवान का अन्तिम निर्वाण दिवस

(तर्ज विदेसिया)

चुन्द घर खाइ जब, भगवन पलटलै से,
पड़ि गइलै कठिन बीमार प्यारे भाई जी।
रक्त आँव पड़ै लगलै, बढ़ली बेदनवाँ से,
प्रभु मन करै ल विचार प्यारे भाई जी।

"तजबै पुरानी अन्तिम, देह मृत लोकवा कै,
तजि देबै माया कै बजार" प्यारे भाई जी।
आनन्द बुलाइ प्रभु, अगवाँ बढन हित,
चटपट भइलै तइयार प्यारे भाई जी।

"बोलले चलहु बेगि, कुशीनग्र ओरिया से,
पूरा भइलै काम सब हमार प्यारे भाई जी।"
प्रभु कै मरम जानि, आनन्द चलन लागे,
अँसुवा न सकहिं सम्हार प्यारे भाई जी।

थर थर कॉपै उनकर कोमल कलेजवा से,
जइसे लागै आगम अन्हार प्यारे भाई जी।
कुछ दूर चलि एक, रुखवा की छँहियाँ से,
रुकि गइलें जग रखवार प्यारे भाई जी।

[भगवान का जल माँगना]

कहलें "सुनहु आनद, हम थकि गइली से,
कुछ छिन करबै आराम, प्यारे भाई जी।"
बचन सुनत आनद चीवर बिछवलें से,
लेटि गइलें नयना भिराम प्यारे भाई जी।

तनिकै मे मँगलै शीतल प्रभु पनियाँ से
प्यसिया से ओठवा सुखाय प्यारे भाई जी।
करिके विनय आनद अरज सुनवलें से,
बोललें बचन बिलखाय प्यारे भाई जी।

"सडकी कै जल, बयलगडिया कीचड कइली,
*कुकुत्था कछुक दूर बाय प्यारे भाई जी।"
बार बार जल जब, भगवन माँगन लागे,
आनद चललै घबड़ाय प्यारे भाई जी।

पाँच सौ गडियन से कीचड मिलल जल,
बहै थिर निरमल सुभाय प्यारे भाई जी।
अचरज खाइ प्रभु महिमा समुझि आनद,
जल भरि देहलै पिलाय प्यारे भाई जी।

पान करि विमल शीतल जल अनुपम,
भगवन गइलै जुडाय प्यारे भाई जी।

---

* एक नदी थी।

[पुक्कुस के सोनहले वस्त्र की क्षीण आभा]

इतने में पुक्कुस नामक अइलै युवकवा से,
छवि लखि गइलै लुभाय प्यारे भाई जी।
चरन कमल चूमि एक ओर बइठले से,
ज्ञान पाई गइलै अघाय प्यारे भाई जी।

प्रभु से विनय करि बसन सोनहले दो,
प्रेम छकि देहलै ओढाय प्यारे भाई जी।
परम विमल ज्ञान पाइ चलि भइले से,
पग धूलि अँखिया लगाय प्यारे भाई जी।

ओढतै सोनहले बसन फीका भइलै से,
अग दुति दमकै महान प्यारे भाई जी।
अचरज खाइ आनन्द पूछलै करनवॉ से,
हँसि बोले किरपा निधान प्यारे भाई जी।

"एक रात अइसही बढल तन जोतिया से,
पाइ गइली विमल गियान प्यारे भाई जी।
आजु राति पिछले पहर कुसीनगरी में,
पाइ जइबै "परिनिरवान" प्यारे भाई जी।

कुकत्था नदी में चलि करबै नहनवॉ से",
अस कहि कइलै पयान प्यारे भाई जी।

[कुशीनगर की ओर]

करिके स्नान जलपान, चले चितचेति
चुन्द आम्र बन बिसराम प्यारे भाई जी।

---

*पुक्कुस, भगवान के गुरु अराडकलाम के शिष्य थे।

वहाँ जाई चुन्द चट चीवर बिछवले से,
प्रभु पौढ़े दायाँ अग दबाय प्यारे भाई जी।

आनद से चुन्द की सगाहना करत प्रभु—
*अमी भोजन देहलै कराय प्यारे भाई जी।
इनहीं के अन खाइ बनली अमर हम
'परि निरवान पद' पाय प्यारे भाई जी।"

एहि विधि करि बिसराम प्रभु चललै से,
कुशी नग्र गइलै नगिचाय प्यारे भाई जी।
देखतइ शाल वन, मल्लन कै घनघोर,
आनद से कहलै बुझाय प्यारे भाई जी।

"शाल के विशाल दानो पेड बीच मचवा से,
चींवर चौपनी दा बिछाय प्यारे भाई जी।
उत्तर की ओर सिरहनवाँ हमार रहै",
आनद करेलॅ सब धाय प्यारे भाई जी।

दाँए करवट 'सिंह सयन' करत प्रभु
दायाँ पग बाएँ से दबाय प्यारे भाई जी।

[अतिम दर्शन की भीड]

शाल वृक्ष दोनो असमय ही में फूलि गइलै
बरसै सुमन झहराय प्यारे भाई जी।
देव गन संख, घड़ी घटवा बजावै गावै,
पुष्प गन्ध आदि बरसाय प्यारे भाई जी।

---

* अमृत

फूलन से भूमि सब उहवाँ कै ढँकि गइली,
प्रभु छवि बरनी न जाय प्यारे भाई जी।
एक ओर भिक्षुन की भीड़िया अपार रहलीं,
देवगन गइलै उत आय प्यारे भाई जी।

भगवन के दरसन की लेहले ललसवा से,
बारह जोजन लो गइलै छाय प्यारे भाई जी।
भइली भारी भीड़िया अपार ओही बनवाँ मे,
तिल नाहीं कतहुँ अमाय प्यारे भाई जी।

'उपमान' भगवन, के पखवा झलत रहलै,
प्रभु उनके देहलै हटाय प्यारे भाई जी।
भगवन कै दरशन सब कोई करै लगलै
कइ देहलें सुघर उपाय प्यारे भाई जी।

भगवन की अनुपम रहल आज झँकिया से
देखै सब नेहिया लगाय प्यारे भाई जी।

[चार महा तीथा की घोषणा]

यहि बीच आनन्द विकल होइ बोलले से,
"अब सबसे भेटिया न होई प्यारे भाई जी।
बडे बडे साधुन कै दरस परस नित,
प्रभु बिनु पइहैं न कोई प्यारे भाई जी।"

बचन सुनत प्रभु बोलें मोरे पिछवौ मी,
होत रहिहैं सबसे मिलाप प्यारे भाई जी।

सुनिके विनय प्रभु चट बोलि उठलै से,
"कहला न बतिया विचार, प्यारे भाई जी।
सबही के हित हम दुनिया मे अइली से,
मरम न जनला हमार प्यारे भाई जी।

सबही के हित हम राज सुख तजली से,
तजि देहली नगर प्रधान प्यारे भाई जी।
सबही के सुखवा की रहिया बतवली से,
भेद भाव रखली न ध्यान प्यारे भाई जी।

दीन हीन जन हित गॉव गॉव धवली से,
भेटली सबहि ललकाय प्यारे भाई जी।
इनही कै असली हम रहली सेवकवा से,
इनहीं में जइबै समाय प्यारे भाई जी।

कुशीनारा नगरिउ महान कभी रहलीं से,
नृपति सुदरशन कै थान प्यारे भाई जी।
फिर एही धरती कै भगिया पलटिहै से,
रहिहै न जगल विरान प्यारे भाई जी।

कुशीनगर वासी मल्ल लोग देव काज हित,
मिलिजुलि करत विचार प्यारे भाई जी।
परम पियारे आनद उनके बुलाओ वेगि,
करै सब दरस हमार प्यारे भाई जी।

पाइके विमल ज्ञान आनद तुरत गइलैं,
देहलै खबरिया जनाय प्यारे भाई जी
रोवत धोवत चललै मल्ल परिवरवा से
पल में पहुॅचलन आय प्यारे भाई जी

टोलियन मे बाँटि आनद दरस करवलै से,
भारी भीड देह्लै बचाय प्यारे भाई जी।

[अतिम शिष्य]

रतिया कै बीति गइलै पहिला पहरवा से,
अइलैं सुभद्र अकुलाय प्यारे भाई जी।
प्रभु से मिलन हित अगवाँ बढ़ल चाहै,
रोकलै आनद समझाय प्यारे भाई जी।

उनके हृदय कै प्रभु जनलै मरिमियाँ से,
लेहलै तुरत बुलवाय प्यारे भाई जी।
उनहूँ के सुखवा की रहिया बतवलै से,
अतिम चेला लेहलै बनाय प्यारे भाई जी।

[अतिम उपदेश]

आनद और भिक्षुन के पुनि उपदेसलै से,
बाकी बात देहलै बताय प्यारे भाई जी।
शास्ता[1] 'ब्रह्मदड[2] भन्ते,[3] 'बन्धु[4] आदि शब्दवन की
महिमा भी कहलैं चेताय प्यारे भाई जी।

भगवान गौतम बुद्ध ने कहा—

१-"हे आनद हमारे चले जाने के बाद तुम लोगों की शास्ता, मेरी धम विधि और शासन विधि रहेगी।

२-भगवान ने कहा "हे आनद जो कोई मेरा शिष्य या मेरे धर्मका मानने वाला व्यक्ति अपनी इच्छा से हमारे धम के रास्ते को छोड दे उससे तुम लोग कुछ न बोलना। यही "ब्रह्म दड है।"

३, ४-भगवन ने कहा "हे आनद हमारे चले जाने के बाद पुराने शिष्य नए शिष्यों को 'बन्धु, या 'आवुसो, कह कर तथा, नए शिष्य पुराने शिष्यो को 'भन्ते' कह कर सबोधन करेगे।"

'बुद्ध, 'संघ, 'धर्म, औ विधान के गियनवाँ की,
यदिया भी लिए कबुलाय प्यारे भाई जी।
सब कुछ दुविधा, सदेहवा मिटाइ प्रभु,
अंतिम बात कहलें चेताय प्यारे भाई जी।

"जग मे संयोग और उससे प्रकट वस्तु,
नाश या विलग खलु* होय प्यारे भाई जी।
होइ के सचेत, दत्त चित्त, साधन करि करि,
लक्ष्य लाभ करो सब कोय प्यारे भाई जी।

[महा परिनिर्वाण]

देइ उपदेश प्रभु मौन अब भइलैं से,
कइसे करूँ छवि कै बखान प्यारे भाई जी।
कमल नयन बन्द, चन्द-मुख चमकत,
करत सयन डूबे ध्यान प्यारे भाई जी।

परम सुखद शून्य मय नित्य शान्ति जहाँ,
धीरे धीरे करत पयान प्यारे भाई जी।
राति बइसाख की पुरनिमा, तीसरे पहर,
पाइ गइलैं परिनिरवान प्यारे भाई जी।

एहि छिन अइलै भूडोलवा प्रलयकारी,
होवै नाही कवि से बखान प्यारे भाई जी।
बज्र धुनि सुनि दसो लोकवा चिहुकलै से,
रहि रहि मूदै दोनो कान प्यारे भाई जी।

* ५—निश्चय।

आँधी औ तूफनवाँ से हाहाकार मचि गइल,
बिजुली कुरेदि मारै जान प्यारे भाई जी।
घहरि घहरि जल बरसै बदरवा से,
फाटि परै जइसे आसमान प्यारे भाई जी।

प्रभु परिनिरवान पद पाइ गइलै से,
इन्द्र, ब्रह्मा किए गुन गान प्यार भाई जी।
आनन्द अनिरुद्ध आदि स्तुति उचारै लगलैं,
धरि धरि धीर अरु ध्यान प्यारे भाई जी।

ज्ञान के अधूरे जेते नर नारी, देव, साधु,
करहिं रुदन धाड खाय प्यारे भाई जी।
केश बिखराय हाथ कितने फैलाए रोवै,
केते मौन अँसुवा गिराय प्यारे भाई जी।

ज्ञानी साधु-देव सबै धीरज बँधावै लागे,
प्रभु जी की बतिया सुनाय प्यारे भाई जी।
यहि विधि धर्म की आलोचना करत ज्ञानी,
बाकी रात देहलै बिताय प्यारे भाई जी।

[शव सस्कार]

होत भोर मल्लगन शव की पूजन ठाने,
गन्ध, धूप, अगर जलाय प्यारे भाई जी।
बजना बजावै गावै प्रभु किरतनवाँ से,
नाचि कूदि फूल बरसाय प्यारे भाई जी।

रहि रहि पूजन की विधिया बदलै सब,
प्रेम नाहीं हृदय समाय प्यारे भाई जी।
एक दिन नाही छ छः दिन प्रभु देहियाँ का,
पूजन में देहलै बिनाय प्यारे भाई जी।

सातएँ दिवस आनन्द जइसे बतवलै से,
अरथी के देहलै सजाय प्यारे भाई जी।
पाँच सौ बार नए वस्त्र धूनी रूइया से,
शव के लपेटलै बनाय प्यारे भाई जी।

लोहे की सदूकिया मे तेलवा भराय राखे,
भली विधि लसिया' डुबाय प्यार भाई जी।
'चितवा' सजवलै सुगधित चीज लेइ लेइ,
रखलै सन्दुकिया जमाय प्यारे भाई जी।

हारि गइलै मल्ल परिवरवा चिता मे आग
अब नाही सकलैं धराय प्यारे भाई जी।
प्रभु के परम प्रिय शिष्य हित देव सब
रचि देहलै छिपली उपाय प्यारे भाई जी।

इतनै में पाँच सब शिष्यन सहित सोइ
महा काश्यप गइले तहँ आय प्यारे भाई जी।
पाँचो सौ शिष्यन सहित पूजे प्रभुशव
हार, फूल, चन्दन, चढ़ाय प्यारे भाई जी।

तीन बार पूरा कइलै जब परिकरमा से
चितवा उठैले धुधुवाय प्यारे भाई जी।

---

* चिता

[स्तूप निर्माण]

भली भाँति जलि गइली प्रभु जी की शरीरिया से,
बरसै जलद घहराय प्यारे भाई जी ।
धरती के भीतरो से फूटी जल धरवा से,
चिता गइली छन में बुझाय प्यारे भाई जी ।

मल्लगन भगवन की अस्थियाँ[1] बटोरलैं से,
कुंभ[2] भरि रखलैं सजाय प्यारे भाई जी ।
सात राजा तेहि कारन कइलै चढइया से,
मल्लवीर लेहलैं बचाय प्यारे भाई जी ।

विप्र द्रोण अस्थियन कै आठ भाग कइलैं से,
देहलैं झगडवा मिटाय प्यारे भाई जी ।
आठो जगह भगवन की धातुओ पर बनि गइलैं,
ऊँचे औ विशाल शुभ स्तूप प्यारे भाई जी ।

१—अस्थियों पर ८ जगहो में स्तूप निमाण हुए—

१—राज गृह मे अजात शत्रु द्वारा (२) वैशाली मे लिच्छिवी लोगों द्वारा (३) कपिल वस्तु मे, शाक्यो द्वारा (४) अल्ल कल्प में बुलियों द्वारा, (५) बेठ द्वीप में ब्राह्मणो द्वारा, (६) राम ग्राम मे कोलियों द्वारा, (७) पावा में मल्लो द्वारा और (८) कुशीनगर मे मल्लों द्वारा ।

२—दो स्तूप और बने (१) भगवान की चिता के अगारे पर अगार स्तूप, पिप्पलवती मे मौर्यो द्वारा (२) जिस कुम्भ मे भगवान की अस्थियाँ रक्खी गई थी उस पर कुम्भ स्तूप द्रोणा चार्य द्वारा । इस प्रकार सब दस स्तूप बने ।

चिता के अगारे और कुमओ पर बनि गइल,
वइसै शुभ स्तूप दो अनूप प्यारे भाई जी।
दसो शुभ स्तूप अभी बाटे पहि धरती पर,
जइसे पावन भगवन कै रूप प्यारे भाई जी।

श्रद्धासनि इनकर दरस जिन करिहैं से,
परिहै न कभी भव कूप प्यारे भाई जी।
सत्य, दया, प्रेम, शुभ शान्ति घर करिहै से
उनके हृदय मे सब आय प्यारे भाई जी।

ऊँच नीच भाव, भय, क्रोध, सब मिटि जइहै—
तृषना न सकिहै डिगाय प्यारे भाई जी।
दुनिया मे जनम के फल पाई जइहै से,
भली भाँति जइहै अघाय प्यारे भाई जी।

अन्त मे अमर पुर जाइ सुख भोगिहैं से
जहाँ कभी दु ख न देखाय प्यारे भाई जी।

"बुद्ध शरण गच्छामि"
"धर्म शरण गच्छामि"
"सघ शरण गच्छामि"
॥ इति ॥

बुद्ध-कीर्तन

[१]

भक्त की कामना

अब बुद्धदेव का प्रेम से कीर्तन हम गावै गे,
कीर्तन हम गावै गे।
मानव जीवन का फल अनुपम इक छन में पावै गे,
कीर्तन हम गावै गे ॥ टेक ॥

हिंसा, तृणा, कलह का, मन मे राज न होगा
राज न होगा,
शुभ शान्ति, दया औ प्रेम का दर्शन हम पावै गे,
कीर्तन हम गावै गे ॥ अब० ॥

भाई भाई का नाता हम दुनिया से जोड़ै गे,
दुनिया से जोड़ै गे,
ऊसर सरीखे हिरदय मे मधुबन बसावै गे,
कीर्तन हम गावै गे ॥ अब० ॥

दलितो, दीनो हीनो को हम छाती लगावै गे,
छाती लगावै गे,
जाति-पाँति की अब सारी उलझन मिटावै गे,
कीर्तन हम गावै गे ॥ अब० ॥

विषयो के पीछे दौडता मन बस मे आएगा,
बस में आएगा,
चिन्ता-चिता की लपटो में जल भुन न जावै गे,
कीर्तन हम गावै गे ॥ अब० ॥

आवागमन के चक्कर म पिसते न रहैगे
पिसते न रहैंगे,
दुक्खो से दहले दिल की हम धड़कन मिटावै गे
कीर्तन हम गावै गे ॥ अब० ॥

---

[२]

शरणापन्न

बुद्ध बाबा म शरण तुम्मारी हो,
जल्दी लीजै खबरिया हमारी हो ॥ टेक ॥

काम क्रोध मद मोह सतावै,
दुख की नई नई खोह झकावै,
तृष्णा करत ठगहारी हो ॥ बुद्ध० ॥

मन को त्याग तनिक नहि भावै,
लिप्सा लासा सरिस फँसावै,
माया बनल महामारी हो ॥ बुद्ध० ॥

सत्य असत्य की परख न आवै,
हिसारत मन चचल धावै,
चिन्ता की खुलली दुवारी हो ॥बुद्ध० ॥

अपने धरम की राह बतादो,
नइया हमरी पार लगादो,
जाऊँ चरण की वलिहारी हो ॥बुद्ध०॥

---

[३]

प्रयाण-गीत

बुद्ध भगवन की जय जय मनाते चलो,
दुष्ट मनको को पराजय दिखाते चलो। टेक।

प्राणियों को न तुमसे तनिक कष्ट हो,
व्यर्थ क्षण एक भी न कहीं नष्ट हो,
धार करुणा की मन मे बहाते चलो। बुद्ध०।

देखना इन्द्रियों के न घोडे भगे,
इनमे सयम के दिन रात कोडे लगे,
अपने रथ को सुमारग लगाते चलो। बुद्ध०।

मृत्यु पीछे पड़ी है सजग तुम रहो,
पुण्य सचय करो, प्रेम नद में बहो,
शान्ति का पाठ पढ़ते पढाते चलो। बुद्ध०।

तीर तृष्णा न हन हन के मारे तुझे,
माया ममता न भव कूप डारे तुझे,
सत्य निष्ठा से प्रभु को रिझाते चलो। बुद्ध०।

---

[४]

भक्त की साध

हमे दो भक्ति हे भगवन, तुम्हारा ही कहाऊँगा,
तुम्हारा प्रेम पाने को, सदा आँसू बहाऊँगा ॥ टेक ॥

निरख कर हंस को घायल, दया मय आप आए थे,
उसी करुणा की धारा में सदा मै भी नहाऊँगा ॥
॥ हमे दो० ॥

मृतक, रोगी औ बूढ़ा देख, प्रभु ने राज्य सुख त्यागा,
दुखो से मुक्त होने की वही लौ मैं लगाऊँगा ॥
॥ हमे दो० ॥

अधिक सुख या तपस्या व्यर्थ कहि शुभमार्ग बतलाए
उसी पथ पर कदम अपना, हे मनमोहन बढ़ाऊँगा ॥
॥ हमे दो० ॥

लपक कर दलित दीनों को हृदय ज्यो प्रभु लगाते थे,
उसी विधि मै अनाथों को सदा अपना बनाऊँगा ॥
॥ हमे दो० ॥

भ्रमण कर ज्ञान का अमृत यथा भगवन पिलाते थे,
उसी विधि में वही उपदेश जनता को सुनाऊँगा ॥
॥ हमें दो० ॥

[५]

महा भिक्षु को दान

है एक बुद्ध भगवान भरोसा तेरा—
काटो सब बन्धन मेरा ॥ टेक ॥

माया अति मन को प्यारी,
तृष्णा से हो गइ यारी,
है शून्य हृदय अज्ञान घना तमघेरा—
बसते जहँ बहुत लुटेरा ॥ है एक० ॥

चंचल मन हाथ न आवै,
चिन्ता बनि चिता जलावै,
नहिं सत्य सकूँ पहिचान बनालो चेरा
कर दो तुम तनिक उजेरा ॥ है एक० ॥

आगुल्य माल हत्यारा,
बन गया तुम्हारा प्यारा,
गणिका का सुनि सम्मान अधम न टेरा
मेटो दुनिया का फेरा ॥ है एक० ॥

दुनिया के अवगुण सारे,
बसते जिस हृदय हमारे,
वह करूँ तुझे मैं दान बना लो डेरा,
ले लो प्रभु वही बसेरा ॥ है एक० ॥

---

[६]

भक्त की यॉचना

तुम्हारे द्वारे आया हूँ बुद्ध भगवान,
विपति के मारे, मिलता न कतहूँ ठिकान ॥ टेक ॥

चरण कमल पर बलि बलि जाऊँ,
त्राहि त्राहि प्रभु अलख लगाऊँ
करदो दया कै कछु दान, ॥ तुम्हारे० ॥

सुना कि प्रभु दीनहि अपनाते,
पापी को भी अक लगाते,
भाई तुम्हारी अनुपम बान ॥ तुम्हारे० ॥

मै कलयुग का रहने वाला,
भव सागर में बहने वाला,
सत्य सकूँ न पहिचान ॥ तुम्हारे० ॥
चलल मन विषयन सॅग धावै,
आलस नींद हमहि अति भावै,
हिरदय अघन की खान ॥ तुम्हारे० ॥

दीन बन्धु जोगेश्वर जागो,
गद् गद् हो करुणा रस पागो,
भरदो हृदय मे शुभ ज्ञान ॥ तुम्हारे० ।

निर्भय सत्य बचन अब बोलूँ,
पर सेवा मे प्रति क्षण डोलूँ,
पाऊँ सुखद निरवान ॥ तुम्हारे० ॥

[७]

प्रार्थना

हमें दो बुद्ध देव बरदान ॥ टेक ॥

हिंसा, घृणा, कलह हम त्यागे,
पर सेवा मे प्रति क्षण लागे,
करे विश्व कल्याण ॥ हमे दो० ॥

ऊँच नीच का भेद भुला दे,
द्वेष, दंभ का दूह ढहा दे—
सत लेवे पहचान ॥ हमे दो० ॥

चोरी जुआ आदि हम छोडे,
शुभ कर्मों से नाता जोडे
लहै शान्ति, सुख खान ॥ हमे दो० ॥

पर निंदा, चुगली नहि भावै।
दया, प्रेम, करुणा, उर आवै,
बने धीर, धीमान ॥ हमें दो० ॥

आलस और ऊँघना भागे
तृष्णा रहित चेतना जागे
निर्भय बने महान ॥ हमें दो० ॥

[८]

प्रभात फेरी

जाग रे जहान, जाग जाग रे जहॉन,
आलस्य मोह त्याग देख स्वर्ण का विहान ॥ टेक ॥

हिंसा, घृणा, कलह का व्यर्थ हो रहा शिकार,
शान्ति प्राप्ति के लिए न कर रहा विचार,
बन्धु बन्धु का अरे ! करै है रक्तपान ! ॥ जाग रे० ॥

सभ्यता की डींग व्यर्थ ही तू हॉकता,
इधर उधर की धूल व्यर्थ ही तू फॉकता,
सत्य, दया, त्याग, प्रेम से तू बन महान ॥ जाग रे० ॥

बुद्ध का विशुद्ध मार्ग छोड क्या चला,
सम्बन्ध स्वर्ग का तू आज तोड क्यो चला,
आजा राज मार्ग पर बजा के अब निसान ॥ जाग रे० ॥

---

[९]

आवाहन

हे सिद्ध बुद्ध भगवान,
दया के धाम,
धरा पर धाओ—
मग हाहाकार मिटाओ ॥ टेक ॥

कोमल करुणा बरसा दो,
हिंसा की आग बुझा दो,
दो दया प्रेम का दान,
करो कल्यान,
न देर लगाओ—
आँसू पर बहते आओ ॥ हे सिद्ध बुद्ध० ॥

ममता मद मोह मिटा दो,
समता का पाठ पढ़ा दो,
बन रही भूमि श्मशान,—
मचा कुहराम,
सुधा ढरकाओ,
आओ करुणाकर आओ ॥ हे सिद्ध बुद्ध० ॥

[१०]

भक्त-प्रतिज्ञा

बुद्ध बाबा की करबै नोकरिया हो ॥ टेक ॥

● झूठे बचन हम कबहु न बोलब,
सत्य कै बनबै पुजरिया हो ॥ बुद्ध० ॥

● कबहूँ किसी कै दिल न दुखइबै,
तजबै सकल ठगहरिया हो ॥ बुद्ध० ॥

● ऊँच औ नीच के भेद भुलइबै
समता पर रखबै नजरिया हो ॥ बुद्ध० ॥

● मदिरा न पियबै जुआ नहि खेलबै,
करबै कभी नही चोरिया हो ॥ बुद्ध० ॥

● सेवा मे अपनी उमर हम बितइबै,
माया कै तजबै नगरिया हो ॥ बुद्ध० ॥

● तृष्णा को अपने मन से मिटइबै—
धर्म की धरबै डहरिया हो ॥ बुद्ध० ॥

● नोट—इस गीत की अतरावाली पक्तिया दो दो बार कहते है ।

[११]

प्रयाण-गीत

जगत गुरु कि जय जय मनाते चलैगे
कदम सत्य पथ पै बढाते चलैगे ॥ टेक ॥

किसी जीव को कष्ट हमसे न होगा,
कोई व्यक्ति भी रुष्ट हमसे न होगा
दिलो मे सभी के समाते चलै गे ॥ जगत गुरु० ॥

लगी आग हिसा, घृणा की जहाँ है,
प्रथम आज हमको पहुँचना वहाँ है,
वहाँ प्रेम का नद बहाते चलै गे ॥ जगत गुरु० ॥

जहाँ फूट के बीज बिखरे मिलै गे,
जहाँ द्वेष औ दम्भ उभरे मिलै गे,
उन्हे शान्ति से ही मिटाते चलै गे ॥ जगत गुरु० ॥

मुझे माया ममता लुभा न सकै गी
न आलस्य तृष्णा डिगा अव सकै गी,
अभय त्याग के राग गाते चलै गे ॥ जगत गुरु० ॥

इसी भाँति अतिम सफर तय ये होगी,
मुहब्बत सभी के दिलो मे बढ़ैगी,
महा भिक्षु को यौ रिझाते चलै गे ॥ जगत गुरु० ॥

आरती

जय जय अजर-अमर अविनाशी ।
सिद्ध बुद्ध अनुपम गुण राशी ॥

जगत गुरू जोगेश्वर जय जय ।
सत्य रूप परमेश्वर जय जय ॥

जय जय मानव धर्म विधायक ।
दलित दीन जनता के नायक ॥

जयति जयति जय प्रेम पुजारी ।
करुणाकर पावन व्रतधारी ॥

जय भक्तन के प्रान पियारे ।
शान्ति - सुधा बरसावन हारे ॥

जय वसुधा के भाग्य विधाता ।
पावन युग परवरतक ताता ॥

जय निर्भय पथ धावन हारे ।
शुचि पद-चिह्न बनावन हारे ॥

जय जय परम अहिंसक बीरा ।
क्षमा सिंधु कोमल मतिधीरा ॥

जय समदर्शी कृपा निधाना।
पुरुष पुरातन, प्रभु, भगवाना॥
जय मुद मगल दायक स्वामी।
अधम उधारन अन्तर यामी॥

जय अनुपम सुख साधन वारे।
भेद भाव घातक मतवारे॥
जय सर्वज्ञ, शील व्रत धारी।
मगल करन अमग हारी॥

जय निर्वाण मार्ग के शोधक।
दुखित दीन दुनिया के बोधक॥
जय मानव उर अजिर[1] बिहारी।
क्षमा सिन्धु, करुणा अवतारी॥

दोहा

जय जोगेश्वर जगत गुरु, जय वसुधा के प्राण
त्याग मूर्त्ति, करुणा अयन[2], मानवता के त्राण[3]

❀ ❀ ❀

"बुद्ध शरण गच्छामि"
"धर्म शरण गच्छामि"
"सघ शरण गच्छामि"

समाप्त